दुखिया बाबाक खटरास



श्री राजेश्वर झा

प्राक्कथन

नाहं नरेन्द्रो न नरेन्द्रपुत्रः
पादोपजीवी तव देव भृत्यः
अथाप्रियस्येव निवेदनार्थ-
मिहागतोऽहं तव पादमूलम्

—दिव्यावदान

परिवर्तने तँ सत्य थिक ! जे पहिने नहि छल से आब अछि और जे आब अछि ओ अभाव कें प्राप्त करैत अछि। किन्तु दिव्यावदान मे जे कथा रूपावतीक प्रसंग मे कहल गेल अछि जे जाहि सत्यक लेल ओ एक नेनाक प्राण-रक्षा अपन दुनू स्तन कें काटि कए कएलक ओ सत्य ने राज्यक हेतु, ने भोगक हेतु, ने स्वर्गक हेतु वा ने अन्य कोनो इच्छे सँ प्रेरित छल। ओहि सत्यक पाछाँ मात्र एके गोट भावना छलैक इन्द्रिय लोलुप कें इन्द्रिय-निग्रह तथा आत्मदमन सिखेबाक, अमुक्त कें मुक्त करबाक, निस्सहाय कें प्रश्रए देबाक और दुखी कें दुखक निवृत्ति करबाक। एहि सत्य सँ प्रेरित तथा मिथ्या आडम्बर एवं कुरीति सँ ग्रसित समाज सँ दुखिया बाबा उछटल, उपड़ल और उद्विग्न छथि।

मिथिलाक महानता ओकर आध्यात्मिक जीवन मे छल जे त्याग, तपस्या तथा नैतिक जीवन मे प्राप्त छलैक। किन्तु परिवर्तन जे सत्य थिक त्याग कें स्वार्थ मे, साधना कें मिथ्या आडम्बर मे, और नैतिकता कें दुराचारिता मे परिणत कए जन-जीवन कें तेना ने उद्वेलित एवं विषाक्त बनौने अछि जे छोट-पैघ सभ ओहि सँ आक्रान्त तँ छथि मुदा ककरहु कोनो टा युक्ति नहि सुझैत छनि। नहि कहि ई आडम्बर एहि समाज कें कतए लए जायत और कोना मिथिलाक संस्कृतिक रक्षा भए सकत !

दुखिया बाबा प्राचीन मिथिलाक सांस्कृतिक प्रतिनिधि स्वरूप थिकाह जकर विकास द्वेष एवं दम्भ कें पराजित कएकें भेल। हुनका नाम-धाम सँ कोनहु सम्बन्ध नहि रहि मात्र हमर कल्पनाक आधार छनि जकर उपकरण कौतुकप्रियता और चातुर्य थिक। बाबी कहुखन अति सरल और नम्र; कहुखन कठोर और अभिमानिनी तथा कहुखन पूर्ण रहस्यमयी बनि नारी-जीवनक सत्य कें सार्थक बनबैत छथि जाहि सँ सतत ओ अगमे बनल रहलीह। राधे परस्पर विरोधी तत्व कें मिलेबाक एक कड़ी थिकाह् जे निष्पक्ष और निस्वार्थ रूपें कटु सत्यक अनुमोदन करैत छथि। हिनको लोकनिक नाम-गामक आधार हमर कल्पने थिक।

"दुखिया बाबाक खटरास"क काया सात गोट कथा पर आधारित अछि। एहि मे सँ छः गोट कथा तँ पूर्वहि समय-समय पर 'मिथिला-मिहिर' मे प्रकाशित भए चुकल अछि जकरा मे किछु जोड़ि पुनः पाठकक समक्ष प्रस्तुत कएल अछि। एहि कथा सभ मे कतिपय एहन शब्द सभ अछि जकर प्रयोग गाम-घर मे होइत अछि। एहि मे बेसी शब्द देशी थिक जकरा अपन पृथक इतिहास और व्यापकता छैक।

अन्त मे मैथिलीक साहित्यकार सँ हमर विज्ञप्ति अछि जे एहि मे जे दोष और त्रुटि अछि ओकरा हमर अल्पज्ञानक द्योतक बूझि क्षमा करथि।

विद्यापति-स्मृति-दिवस,

१८ नवम्बर, १९७२

—राजेश्वर झ

सपनाक नोर

नोर चुयेबामे, गप्पकें गिजबामे आ गलंजर पर गेड़ जोतबामे जतेक ब्राह्मणकें गुमान रहैछ ओतेक अनका नहि। एहेन कोनो गाम नहि जतए एक-दूगोट एहि तरहक अगिया-बेताल नहि रहैत अछि।

दुखिया बाबाक स्थान गाममे एहने लोकक मध्य छल। सम्बन्धमे ओ चाहे काका रहथुन, भाय रहथुन वा बाबा किन्तु हुनका सभ दुखिये बाबा नामे सम्बोधन करैत छल।

दुखिया बाबा गाममे तेहन ने उठल्लू छलाह जे जँ क्यो अंठियो गाममे बोतू, साँढ़ वा पाड़ाक उद्देश्यमे आयल तँ खुरलुच्चीलोकनि हुनका दुखिया बाबाक ओतए पठौलनि आ ओ हुनका पठौनिहारक संगे सातो पुरुषाकें उघेसब आ उकटब प्रारम्भ करैत छलाह। एहि तरहें हुनका अकच्छायब आ हुनकर अनटोटल एवं अनसोहाँत अनधुन कथाकें अङेजब लोक सभक आदति भए गेल छलैक। दुखिया बाबाक ओना तँ कतिपय मनोरंजक कथा सभ अछि, एहिमे सपनाक नोर बड़ आह्लादपूर्ण अछि।

विपत्ति आ हर्ष दुनूमे साधारणतः लोकक आँखिसँ नोर चुबैत अछि। किन्तु दुखिया बाबाक आँखिसँ जखन कखनो नोर चुअल तँ ओ हुनकर मृत पत्नीक प्रति उच्छ सिनेह आ मुइल सिमिरिताइक हेतु छल जकरा मात्र बकछुच्छक खेल कहल जाए सकैछ।

पचीस वर्ष पूर्वक मुइल पत्नीक मलकोका सन मुँह, डोका सन आँखि, दाड़िम सन दाँत एवं कोइली सन कुहकब आदिक प्रसंगमे मोन पड़िते दुखिया बाबाक आँखिसँ दहोबहो नोर खसए लगैत छलनि तथा ओ बड़ प्रेमसँ हुनकर सिनेहकें बिधुनय लगैत छलाह जे हुनकर मृत्युक पश्चात् सकचूनर भए गेल छल।

पत्नीक मृत्युक उपरान्त यद्यपि शीघ्रे बाबा अपन सभटा सिनेहृके सकवेधि पुनः विवाह कए हृदय आ मोन दूनूके हिलकोरए लगलाह किन्तु फलाफल उनटा भेलनि। खापरि सन कारी, खुरपी सन सन दाँत, भेड़ी सन रुच्छ केश तथा खिखिर सन बाजबके सुनिते बाबाक सम्पूर्ण सेहन्ता दिवड़ाक भीड़ भए जानि आ ओ अपन खाटपर पड़ि कम्बलसँ अपन समस्त अंगके झाँपि लैत छलाह आ बाबी अपन जब्बर देहके खिड़हरिपर ओलरबैत अपन अपरोजकता तथा अराट-कपनीसँ दाम्पत्य जीवनके कुरकुट करैत छलीह। बाबा जँ अलबेला छलाह तँ बाबी अलगी, बाबा जँ पकठोस छलाह तँ बाबी बिम्हकी, आ जँ बाबा अगिलकंठ छलाह तँ बाबी अकानि। कहबाक तात्पर्य ई जे पति आ पत्नीमे सरासरि आकाश पतालक अन्तर छल जे दुनूके समीप अयबामे बाधक भेल। एहि तरहेँ समय बितैत गेल तथा एक राति दुखिया बाबा अपन भाग्यके दोष दैत पेटकान लाधि स्त्रीक मतमुनपन पर माहुर फिचैत निन्न पड़ि गेलाह।

बाबा अप्सरा लोकमे टहलए लगलाह। उर्वशीक सुकुमार पाणिपल्लभ, मेनकाक पातर डाँर, रंभाक रभसैत वाणी तथा चित्रलेखाक नृत्य हुनकर अन्तः-करणके दलमलित करए लागल। हुनकर अंग-प्रत्यंग सिहरए लगलनि तथा सम्भ्रमके ओ पूर्णतः गमा देलनि। बाबा स्वच्छन्द-पूर्वक सुर-सुन्दरीक संग मनुहार करए लगलाह।

किछु कालक उपरान्त बाबाक पट-शिष्य राधे जे सरोकारे बाबाक भागिन रहथिन, हुनकर मृत पत्नीक संग स्नेहालाप करैत बाबाक ओतए अयलाह। हुनकर पत्नीक कोरामे तीन बर्षक एक गोट कन्या छलनि। बाबा पचीस बर्ष पूर्व बिछोह भेल प्रेयसीके बड़ आह्लादसँ भेट कयलथिन। हुनकर कोरासँ ओहि कन्याके लए छाती लगौलनि तथा पैंच अड़साक बाद जहिना प्रियतमाके अंगी-कार करबाक हेतु अपन पैंच-पैंच हाथके आगाँ बढ़ौलनि कि ओ पाछाँ हटि बाबाके बरजैत बजलीह "राम ! राम ! की खेआल करैत छी ? अनका पर एना कुचीठि देब बड़ पतितपन थिक। की अहाँके नहि बुझल अछि जे हमर सगाइ राधेसँ भए गेल ? हम हिनकर धर्मपत्नी थिकियनि आ ई थिकाह हमर सतीत्व-रक्षक।

पत्नीक एहि कथाकें सुनि बाबाक करेजमे आगि लागि गेलनि। ओ फरफैसी करैत राधेकें गारि दैत बजलाह—"एहेन सपरतिभ ! कनेक विचारो नहि कयलक जे ई हमर के थिकीह ! पलिताहा अगिलेसू कहाँकि ! सीरा आगू नदी फिरलक। आ ई मौगी केहन छनिकटि अछि ? जकरा हम अनमोल ग्रिमहार बुझैत छलहुँ से नागिन भेल, नागिन !"

बाबाक परमादपूर्ण उक्तिकें सुनि पत्नी प्रत्युत्तर दैत पुनः कहब प्रारम्भ कयलनि—"एना छ|ुनता किएक होइत अछि ? स्त्री की पुरुषक जागीर थिकीह जकरापर सतत अधिकार रहैछ जे जाँत सन पिसैत रहय तथा जारनि सन जरैत रहय आ पुरुषकें ओकरा दिस तकबोधरिक पलखति नहि रहौक। ओ समय आब बीति गेलैक जखन सीता आ सावित्रीक युग छल। आब सभकें बराबरि संविधानमे अधिकार छैक। ई सामंजसक युग थिक। एहि युगमे सभ स्वतंत्र अछि। ककरोपर कोनो बन्हन नहि"। ई कहि ठहाका मारि ओ हँसए लगलीह।

उपर्युक्त वाणी यद्यपि तथ्यपूर्ण छल जे पति-पत्नीक अधिकारक सीमाकें निर्धारण कयलक तथापि बाबा स्नेहातुर भेला सन्ता अपन तामसकें कठहँसीमे बदलैत बजलाह—"स्त्री जे पुरुषक देहक लहसन, आँखिक पिपनी तथा धर्म-अधर्मक ओगरवाहिनी थिकीह आब उचरिङ भए एहि डारिसँ ओहि डारिपर बैसतीह आ हुनकर पति घरखनाह सन भेल हुनकर पाछाँ पाछाँ जयबामे अपन गुमान बुझत। एतेक दिन पत्नी पतिक बात-कथाकें अंङेजैत छल आ आब पति अपन कनसुपती सन कानकें मूनि कनतोप सधने रहत, अपरतिभ भए आँखिमे अन्हरजाली लगौने रहत आ स्त्री स्वच्छन्द भए कए आन-आन पुरुषक संग विहार करत आ फल भोगत ओकर पति, सैह ने अहाँक कहब थिक ?"

दुखिया बाबाक उत्कट उलहनकें सुनि हुनकर पत्नी बिहुँसैत बजलीह—"तँ की स्त्री सदिखन घिरनी जकाँ नचैत रहए, टकुरी जकाँ घुमैत रहए, घरमे घसमोड़ि कए सतत घसेट काटय आ पुरुष जाठि सन ठाढ़ भए कए ओकरा देखैत रहौक ?"

एवंक्रमक कथा यद्यपि बाबाकें बड़ क्षोभ उत्पन्न कयलक तथापि ओ अपन अकरपनपर अकरैत एवं उताहुल होइत बजलाह—"हूँ ! हूँ ! जे हर बहय से खड़ खाय आ बकरी खाय अचार। मेहनति-मजूरी करय पुरुष आ मटकी मारय माउग। पुरुष स्त्रीकें कतबो साज-श्रृंगार करओ किन्तु ओ एक एहन जहर-कनैल थिकीह जे हुनकर अखजक सोझाँमे सभटा प्रलाप व्यर्थ होइछ आ जिह्क समक्ष पुरुष आकाशक तारोधरि तोड़बाक हेतु उद्यत भए जाइछ। स्त्रीक भृकुटीयेमे तँ सृजन आ प्रलय रहैछ। जँ अनुकूल रहैछ तँ अमृतक आलय आ प्रतिकूल रहैछ तँ मृत्युक गह्वर बनि जाइछ। दोषक खान, अवगुणक खाधि तथा द्वेषक प्रतिमूर्त्तिक जीवन तखने सफल थिक जखन ओकरा मायक स्थान उपलब्ध होइछ आ ओ दाम्पत्य जीवनक बिना कथमपि सम्भव नहि भए सकैछ।

पति आ पत्नी नदीक दू कूल थिक जकरा दुनूक सोनितसँ निर्मित सुन्दर प्रसून ओहि दुनू कूलकें मिलबैत अछि। एक दोसराकें समीप अनैत अछि आ आपसक विभिन्नताकें मेटि दुनू सम्मिलित रूपमे ओहि प्रसूनक विकासमे प्रयत्न करैत अछि। की मोन नहि अछि जे अहाँ एक बेर जखन तमसा कए रूसि रहल रही तँ रमण कोना मिलौने छल ?"

बाबाक तर्क सफल भेल। बीतल बातक संस्मरण आ रमणक चर्चा हुनका पत्नीकें विह्वल बना देलक। आँखिसँ अजस्र नोरक धार बहए लागल आ बाबा हुनका बोधैत अपन अङ्गोछासँ ओहि नोरकें पोछैत बजलाह—"धयया अनु करी। अपन घर थिक। एतहि आबसँ रहू।"

बाबाक एहि आग्रहकें आमर्ष मानि हुनक पत्नी प्रत्युत्तर दैत कहए लगलीह—"कोना रहब ? स्त्री की कोनो उचरिङ्ग थिक जे एक डारि सँ दोसर डारिपर बैसति ? जखन राधेसँ आब विवाह कए लेलहुँ तँ फेर कोना दोसर पुरुषक अंकमे जाउ आ विशेष कए तखन जखन हिनका अपन कोनो चिन्ता फिकिर नहि रहि केवल हमरे हेतु सदिखन व्यस्त रहैत छथि आ अहाँ तँ दसद्वारी छी। ताहूपर राधेकें एक हमहीटा छियनि किन्तु अहाँकें तँ प्रेयसी अछिये। अतएव मयदुक्खी किएक मोल लेब।"

पत्नीक अवहेलनाक वचनकें सुनि दुखिया बाबा निराश भए गेलाह तथा दुनू हाथे माथ आ कपारकें पिटैत जोर-जोरसँ विलाप करए लगलाह। समीपमे सुतल बाबी उठलीह। राधे सेहो दौड़ल अएलाह। बाबाक निन्न टूटल। सम्मुख राधेकें देखि फड़ाठीसँ मारब प्रारम्भ कयलनि। अधनट कहाँ केँ! माय, पितियाइन किछु नहि बुझब। तोँ हमरे घरमे डाका देलह। पतित कहाँकें हमर पत्नीक संग प्रेमालाप करताह!"

राधे अकचकाइत पुछलनि—"बाबा की सनकि गेलहुँ अछि। हमरा एना किएक मारैत छी?"

"सनकतहु तोहर बाप आ पितामह। तोँ रमणक मायसँ प्रेमालाप करैत छह।"

"हद्द भए गेल। मुँह बन्द करू। अन्यथा आब हमहू हाथ छोड़ि देब।"

बाबाक दोसर पत्नी जे सभ किछु देखैत ओ सुनैत छलीह नितान्त उग्र रूपकें धए खापड़ि लए दौड़लीह—"अकट्ठी कहाँकें जेहने अपने छथि तहिना अनको बुझैत छथिन।"

ओना तँ बाबाकें ओहिना बाबीसँ सदखिन अड़खीस रहनि ताहिपर हुनक एहि तरहक आतिख कथाकें सुनि ओ अरबधि कए बाबीकें अनटोटल बात कहि-कहि उधेसब प्रारम्भ कयलनि। बाबी तमतमाइत बजलीह—"खबरदार! जँ एको बेर हमर नामोधरि लेलहुँ कि एहि खापड़िसँ चानि तोड़ि देब आ सभटा ठेसी बाहर कए देब। एहेन अनटोटल कथा बजनिहार इएह टा छथि। तखनसँ अनधोल कयने छथि"।

राधेक तनतनी तँ अलगे छल। हाथमे लाठी लए ओ बाबाक माँथपर आब प्रहार करताह तँ आब। एहि त्वम्‍चाहम्‍चक थाह ककरो नहि भेटैत छलैक। थुक्कम फजीती भए रहल छल। सभ क्यो आसमर्द मचौने छलाह। बड़ अजगुत समस्या छल। लोक यद्यपि धराहेरि कए रहल छल। किन्तु किओ माननिहार नहि छल। अन्तमे झगड़ा पंचक अधीन सौंपल गेल।

मोकदमाक सुनवाहि प्रारम्भ भेल। बाबी कनैत आँचर पसारि दिनकर-दीनानाथके' दोहइ दैत अपन सतीत्वक प्रमाण प्रस्तुत कयलनि। राधे हाथमे हरिवंशक पोथी लए अपनाके' निर्दोष करार कयलनि आ दुखिया बाबा बड़ प्रेमसँ सपनाक सम्पूर्ण कथाके' पंचक समक्ष वर्णन कयलनि। ओहि कथाके' सुनि पंच लोकनि हँसैत बिदा भेलाह, बाबी बाबाके' अलगटेंट, अलगफुनगी आदि कहैत लोटा-पीढ़ी माँजए चललीह; राधे अन्हरोखे हाथमे कोदाड़ि लए खेत कोड़बाक हेतु चलचाह आ दुखिया बाबा ऊँच स्वरमे गावए लगलाह—"करम गति टारत नाहि टरय"।

●

ज्ञान पचीसी

अरुआयल अलबल कथाकें ज्ञानक बात कहबामे बूढ़-पुरानलोकनिकें जतेक अहाङ होइत छनि प्राय: ततेक अहाङ ने तँ महाभारत कहबामि व्यासकें वा ने बृहत्‌कथाकार गुणाढ्यकें भेल होयतनि। दुखिया बाबाकें एहि तरहक कथाकें ओलामे जे आह्लाद होइत छलनि से प्राय: सारिस-रह्लोजिक मध्य बैसबोमे नहि भेलनि। भाङक गिलासकें कण्ठक नीचाँमि ढारैत बाबाक ज्ञान-पचीसी प्रारम्भ भेल तथा ओ राधेसँ कहए लगलाह—"हौ! आब लोक उपरफट्ट आ उमताल भए गेल। की पुरुष, की माउग आ की नेनाभुटका सभकें एके उक्खी-विक्खी लागि गेलैक अछि। देखह तोँ अपने बाबीकें, केहन कठकोकाँड़ि छथुन? एहेन कोनो दिन नहि बितैत अछि जखन ओ आगाँ भात आ पाछाँ लात नहि देतीह। हौ! पुरुष आ स्त्रीक कतेक व्यापक सम्बन्ध छलैक! स्त्री पुरुषक गराक माला छल, से आब मोटगर ढेकुल भए गेल। स्त्री पुरुषकें अपन माथक सिनुर बुझैत छल से आब ओकरा घेघ बुझैत अछि। हौ! की कहियह, स्त्री जे परपुरुषसँ सपनोमे आलाप नहि करैत छलीह से आब प्रेमालापो करैत अछि आ पुरुष आन्हर आ बहिर भए कए सभ किछु देखैत आ सुनैत अछि। हौ अनकर कोन कथा, देखैत नहि छहुन अपने बाबीकें! मुँहमे पान दए कोना धीयो-पूतासँ कठहँसी करैत छथुन आ जँ किओ कटगर बात कहैत छनि तँ कोना मुँहपर आँचर राखि कठलाज देखबैत छथुन!"

दुखिया बाबाक कथाकें सुनि राधे प्रतिवाद करैत बजलाह—"बाबा! बाबीक एना खिदान्स सदिखन किएक करैत छियनि? अहाँकें हुनकासँ कथीक अड़लीस अछि?" राधेक एहि प्रतिवाद कें सुनि बाबा ढलै माँछ सन मुँहकें बबैत बजलाह—"हौ! अड़लीस कथिक रहत? हम की आजुक इसखी छी जे स्त्रीकें "ट्रान्जिस्टर" बना कए गरामे लटकौने रहब। लोक सुनैत ओ देखैत रहत आ हम गहदायब! हौ! स्त्री जीवन-सहचरी थिकैक। सेवा-टहल

करबाक हेतु लोक विवाह करैत अछि ने कि आन पुरुषसँ घुट्ठीसोहार करबाक करबाक हेतु, उचरिङ सन उड़बाक हेतु आ उछन्नरि भए कए अनका घरकेँ उजागर करबाक हेतु।" बाबाक एहि उत्कट कथाकेँ सुनि राधे अकचकाइत पुछलनि—"तँ की बाबीक आचरण पर अहाँकेँ शंका अछि?" बाबा गुलजाफरी सन बिहुँसैत बजलाह—"हौ! शंका कथिक रहत? कोन मेनका सन हुनका रूप छनि जे विश्वामित्र सन लोक फतिंगा भए जायत। खटबानरिक रूप आ खजुड़ीक चालि ककरा उजबिजौतैक? तखन आमेख अछि तँ हुनकर अनटोटल कथा आ ओछ अकिलपर। सदिखन बातक अदोड़ी खोटब अकानेक काज थिकैक कीने!" बाबाकेँ उत्तर दैत राधे कहलनि—"बाबा! बाबीक बात तँ आतिख होइते छनि किन्तु की अहाँक दोष नहि रहैत अछि? अहीँ कोन हुनकर कथाकेँ अछैत छिऐक? जँ बाबीक कथा अँखुआ होइत छनि तँ अहाँक कथा सोले स्लान। एहिपर कुस्तमकुस्ती आ कुकूर-कटाउझ नहि होअय तँ की मधुक वर्षा होयत?"

राधेक एहि उत्तरकेँ सुनि बाबा बजलाह—'हौ! से तँ सरिपहुँ दोष हमरो अछि मुदा स्त्री तँ आखिर स्त्रीये थिकीह। विषयकेँ बिना बुझने अर्थायब आ अलगफुलगी मारब की नीक थिकैक? हौ! आब तँ ई अधेर भेलीह किन्तु एहने अपसराहि आ अपरोजक विवाहोक समयमे छलीह! चतुर्थी रातिक कथा थिक। वर-कनियाँ नीक-नीक गप्प करैत अछि किन्तु तोहर बाबीकेँ एतेकधरि पलखति कतए जे थोड़ेक काल धरि अपन मोनक परमादकेँ नुकौने रहतीह। गेलही सन आँखिकेँ नचबैत अपन कोतह-गरदनिकेँ उत्तर-दक्षिण घुमबैत सरासरि बजलीह—'बहिनाक वर केहन सिरीमन्त छथिन।' हौ! कहह तँ केहन अकट्ट कथा थिक। पुरुषक रूप कतहु गलमोछा आ झुलफी भेलैक अछि? ओकर रूप विद्या थिकैक। एहि कथाकेँ सुनि सम्पूर्ण देहमे फोका उठि गेल। एक हाथसँ झोँट पकड़लहुँ आ दोसर हाथसँ मुकिआयब प्रारम्भ तँ कयलहुँ मुदा तोहर बाबीयो की कोनो खढ़ेया छलीह जे पड़यतीह। भगदत्तक मोकुनी सन ओहो ने ओहि महाभारतमे जुटि गेलीह। अनघोल भए गेल। पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चारू दिससँ स्त्री-सेना जुटए लागलि। हौ! विश्वास

करह, ओ कोहबर सत्ये चक्रव्यूह बनि गेल। किन्तु सुकुर एतबेक छल जे ओतए ने तँ जयद्रथे छलाह आ ने हमहीँ अभिमन्यु छलहुँ जाहिसँ उत्तराक विलाप नहि भए सकल।"

दुखिया बाबाक एहि मनोरंजक कथाकेँ सुनि राधे पुनः कहए लगलाह—"बाबा! की ओहू समयमे अहाँ एहने सुन्दर रही जे बावीकेँ पसिन नहि भेलियनि? की बावीक बापकेँ अन्हरजाली लागल छलनि जे अहाँक कठबेङ सन गाल, कोठी सन पेट, टिटही सन टाङ्केँ ओ देखि नहि सकलाह?" राधेक एहि शंकाक समाधान करैत बाबा बजलाह—"हौ! तोँ बड़ पिंगल पढ़ैत छह! हम की कोनो अधलाह छी जेँ ओ हमरा दुसितथि। हौ! ओ ज्योतषी छलाह। भृगुसंहितामे हमर नाम उचरल छल तेँ तँ ओ एगारह सय टाका खर्च कए हमरा अपन जमाय बनौलनि।

बाबाक एहि आड्वाल वचनकेँ सुनि राधे उताहुल होइत बजलाह—"बाबा! बावीक बापकेँ कतेक ब्रह्मोत्तर देखौने रहियनि से नहि कहि। की घरो-दरबाजा ओ देखने छलाह?" बाबा अड़राइत बजलाह—"तँ की तोरा मोने ओ बड़ वहलेल छलाह जे बिना देखने-सुनने हमरा लए गेलाह? हौ! वर आ कनियाँ दुनू तेहन ने मिलान छलैक जे ओ तुरन्ते ने सिद्धान्त करा लेलनि आ जँ से नहि रहितैक तँ आइ तोरालोकनि ई रामलीला नहि ने देखतह। हौ! कन्यादानक समस्या जतबेक जटिल छैक ततबेक जटिल स्त्री पुरुषक समस्या छैक। देखह, तोहर बाबी जँ झगड़ो करैत छथि तँ भानसो-भात तँ करैत छथि। हौ! एक बेरक कथा थिकैक। हम पिछड़ि कए खसि पड़लहुँ। बामा हाथमे कनेक चोट लागल। तोहर बाबी अहरमोहरा सन सभा टा दर्दकेँ पीबि ने गेलीह। हौ! सत्ये कहैत छियह ओ झगड़ा भलेँ करतीह किन्तु भातक तरमे तरल तरकारी, छाल्ही, अचार राखि कए हमरा खुऔतीह। दालिमे विशेष कए घी देतीह। कहह एहिसँ बेसी पातिव्रतक और कोन काज भए सकैछ?"

राधे बजलाह—"बाबा! बावीकेँ भातक तरमे तरकारी इत्यादि रखबाक की तात्पर्य छनि?" बाबा तरफर उत्तर दैत बजलाह—"हौ! बुझलह नहि,

भात परक वस्तु तँ देखबामे अबैत छैक आ धीया-पूता देखते ने लपकि लैत छैक। कहह जँ तोहर बाबी अंग्रेजी पढ़ल रहितथि तँ एना अपना पतिकेँ उलबुलबितथि ? हौ ! देखैत नहि छह जँ कनेको पति-पत्नीमे विचारक गफलति भेलैक कि तलाकक समस्या उठल। उठबो कोना नहि करौक ? वर-कनियाँक आब थोड़ेक विवाह होइत छैक। विवाह तँ होइत छैक धनक। कनियाँक रूप-गुण पर के जाइत अछि ? कनियाँक बाप पितामहक कुल-शीलपर के विचार करैत अछि ? जे पैसा जतेक दैत छैक ओ ओतेक श्रेष्ठ मानल जाइत अछि। भलेँ ओकर क्रिया कर्म अधलाह रहौक। हौ ! सुनैत छी जे लोक आब बजैत अछि जे जेना लोक माल-जाल, हाथी-घोड़ा किनैत अछि तहिना जमाय सेहो किनैत अछि। तखन कुत वस्तुक मोल की ? जँ वस्तु पसीन भेल तँ उत्तम नहि तँ की ओ बदलल नहि जाए सकैत अछि ?"

बाबाक गम्भीर उत्कट कथाकेँ सुनि राधे अचम्भित होइत बजलाह—"बाबा ! केहन अजगुत बात बजैत छी। की समाज आब एहन फूहर भए गेलैक अछि जे सभटा बंधनकेँ भरकुस्सा कए बकतूति बना देलक ?" राधेक प्रश्नक उत्तर दैत बाबा पुनः कहब प्रारम्भ कयलनि—"हौ ! समाज आब छैक ? देखैत नहि छह, लोक आब केहन फुँहराम भए गेलैक अछि ? ककरो क्यो कहनिहार छैक ? जकरा जे मोन होइत छैक सैह करैत अछि। जकरा जेहन फरफैसी छैक तकर तेहन समाजमे आदर छैक। तखन तोँ कहह समाजक बान्ह कोना सक्कत होयत ? हौ ! एक समय छल जँ क्यो अधलाह काज कएलक कि समाज ओकरा सतबेधि देलक। ओकरा फज्झति कए बकानि पिया देलक आ एक ईहो समय अछि जे वरक वियाह तँ भेलैक किन्तु द्विरागमन नहि भए सकलैक। वर सासुरमे पेटकान्ह लधने रहल आ कनियाँकेँ तेहन ने फुनगुनी उठलैक जे ओकरा फुफकारक सोझाँमे वर फुलचठैल बनि गेल आ कनियाँ पाछाँ आन वरक गराक मटरमालाक फुदना बनि झुलैत गुमसड़ए लागल। हौ ! एतेक दिनधरि वरक बाप कनियाँक बापक ओतए बरियाती साजिकए वियाह करए जाइत छल आ आब कनियाँक माय कनियाँक विचारेँ वरकेँ पसीन करति आ कनियाती साजि कए वरक ओतए जाकए विवाह करौतैक।"

जावत दुखिया बाबाक ज्ञान पचीसी चलिते छल कि एहि अभ्यन्तर हकासल-पियासल हनहनाइत बाबी ओतए अयलीह आ बाबाकें कहब प्रारम्भ कयलनि—"आबो एहि फटकफन्दसँ पलखति भेल की नहि ? भानस-भात भए गेल। खयबाक अछि तँ चलू नहि तँ हम सुतलहुँ, तखन जखन पेट खलबलायत तँ टकटोयिआ जुनि देब।"

बाबीक एहि चतकार पर बाबा ध्यान नहि दए ज्ञान पचीसीकें ओतहि स्थगित कए भनसा घरक दिस हलफैत बिदा भेलाह। राधे बाबाक पाछाँ-पाछाँ सेहो चललाह। बाबी भोजन परसलनि। राधे जिज्ञासा करैत पुछलनि—"बाबी ! तरकारी कथिक थिक ?" बाबी उत्तर दैत आग्रह कयलनि—"राधे बाबू, जुआयल माङुरक तीमन भेल अछि। कनेक चिखबैक ?" राधे बाबीक आग्रहकें मानि बैसलाह। माँछ-भात परसल गेल। अपूर्व स्वाद। बाबी माछक काँट छोड़ा-छोड़ा कए बाबाकें दैत छलीह आ बाबा प्रेमसँ भोजन करैत बाबीक भोजन विन्यासक प्रशंसा करैत अकड़ए लगलाह—

"मंगुरी मकरः प्रयागे,
गड़ै गंगा तथैव च।
पोठी सर्व तिर्थानि,
रेहु संख्या न विद्यते॥

●

मनक-मनोरथ

बाबीक फुफकारकें अङेजैत यद्यपि दुखिया बाबाकें फुल्ला धड़ि गेल छलनि किन्तु जखन बाबी अपन वचनक आँकुससँ बाबाक रहल-सहल गुमानकें मटिआमेंट करए लगलीह तँ बाबाक समस्त धैर्य डोलमाल करए लागल तथा बाबा अपन सम्पूर्ण लोभ एवं मोहकें तरासि बाबीकें सुतलि छोड़ि भगवान बुद्ध सन सत्यक खोजमे बाहर भए गेलाह जे सत्य ने तँ राज्यक हेतु, ने भोगक हेतु वा ने स्वर्गक हेतु छल। ओहि सत्यक पाछाँ मात्र एके गोट भावना छलैक आ से छल बाबीक अराड़ि एवं अड़खीसकें आँकब। अतएव बाबाकें उखी-बिखी लागि गेलनि तथा ओ उजबिजाइत घरे-घर, गामे-गाम एवं गाछिये-गाछी माहुर किचैत बौआय लगलाह। एहि तरहें ढहनाइत भूखें-पियासल कतेक दिन बीत गेल। बाबाक पिड़ुकिया सनक गाल चोकड़ि कए चोका भए गेलनि, कदीमा सनक पेट सटकि कए धोधरि भए गेलनि तथा धौलागिरि सनक पीठ घसि कए धोबियाक पाट भए गेलनि।

बाबाकें एहि तरहें फटकफन्दमे फकसियारी कटैत एवं पीसीमाल होइत एकटा प्रेतसँ नहि देखना गेलैक।। ओ बाबाक सोझाँमे प्रकट होइत बाजल— "हौ! एहेन बहेरपन सन किएक बनल छह जे एना हदिआय गेलाह? हौ! पुरुष गाछ थिक, आ स्त्री ओकर लोखड़ैआ। स्त्री जँ घरक धरनि थिक तँ पुरुष ओहि धरनिक मानिक थम्ह। तखन कहह जँ एककें दोसरासँ बिछोह होअए तँ ओ गाछ आ घर कोना रहतैक?"

प्रेतक एहि कथाकें सुनि दुखिया बाबा अधपक्कू भाटा सन मसुआइत बजलाह—'हौ, बूड़िसराठी! कोनो अकानसँ भेंट भेल होयतह तें एना हेकड़ी बघारैत छह। जँ माउगक पाला पड़ितह तँ कठपुतरी बनि जइतह। ओकरासँ सदिखन कच्छी कटितह आ कनतोप साधिकए अपन कनसुपती सन कानकें मुनि ओकर गंजनकें अंङेजए पड़ितह।"

बाबाक एहि कथाकें सुनि प्रेतकें बाबाकें अधिक चेथारब उचित नहि बुझना गेलैक। ओ बाबाकें बहटारि कए स्वर्गक नन्दन वन लए गेल तथा कल्प-वृक्षक छाहरिमे छोड़ि ओ ओतएसँ घसकि देलक।

कल्प-वृक्षक मन्द-मन्द बसात एवं मधुर छाह तर बाबाक सम्पूर्ण थकनी मेटा गेलनि। हुनका भूख लगलनि आ दही-चूड़ा खयबाक इच्छा भेलनि। लगले एक व्यक्ति हुनका लेल मालभोगक चूड़ा, कठगर दही आ एक कोहा चीनी अनलक। बाबा भरि पेट भोजन कयलनि। भोजनोपरान्त बाबाकें औंघी लगलनि। हुनकर करजनी सन आँखि घुमए लगलनि। इच्छा भेलनि एक गोट खाटक। बाबाकें इच्छा भेलनि आ तड़फड़ एक व्यक्ति ओतए एक गोट खाट अनलक जकरापर तोसक आ तकिया ओछाओल छलैक।

बाबा खिलबट्टी महँक पान निकालि कए खएलनि आ प्रसन्न भए ढेकरैत ओहि खाटपर ओलरि गेलाह। सुकोमल सज्जा, कल्प-वृक्षक मादक बसात आ भरल पेट बाबाक बहसल मोनकें और अधिक बढ़ौलक। बाबाक ठेहुन टटाय लगलनि। इच्छा भेलनि उदीयमान सूर्य सन मुँह, बिजली सन धह-धह करैत देह, लाल कमल सन अरुणायल आँखि आ तिलकोड़ाक फड़ सनक ठोर वाली सुन्नरिसँ पयर दबयबाक। बाबाक इच्छा आ कल्पवृक्षक छाह! तुरन्ते एक गोट षोड़सी दामिनि सन दमकैत, हंसिनी सन ठुमकैत अपन गौर वर्णक तरसँ रक्त-लालिमाकें झलकबैत ओहि खाटपर बैसि गेलीह। बाबाक मोन दलमलित करए लागल। हुनका अपन चतुर्थीक राति मोन पड़लनि। कोना बिजुलीक रेह सन बाबी अकस्मात् कोहबरमे आयलि छलीह, अपन तारुण्य विकासक संग शरीरक सौंदर्यकें छिटकौने छलीह और बाबा धुकधुकाइत छाती, दहलैत मन आ कँपैत हाथसँ बाबीक मुँहपरक घोघकें हटौने छलाह। सभटा ओहि रमणी रत्नकें देखि स्मरण भए अयलनि। बाबा सुन्दरीकें अंक लगाकए ओकर भाल चूमि लेलनि आ बड़ आह्लादसँ ओकर संग प्रेमालाप प्रारम्भ तँ कयलनि किन्तु एकाएक बाबाकें शंका भेलनि जे कतहु बाबी तँ ने देखथि आ ओ कड़रैत आ अपन छातीकें पिटैत बाबाक गंजन तँ ने करए लागथि। बाबाक आशंका आ कल्प-वृक्षक छाहक फल। बाबा एहि तरहें सोचिते छलाह कि बाबी अनघोल

करैत ओहि अभ्यन्तर ओतए पहुँचि गेलीह तथा बाबाक उच्छृंखर कार्यकें देखि आमेखक भावनासँ उधिआइत जहिना खाटपरसँ हुनका झमारबाक हेतु दौड़लीह कि बाबा कनछी काटि ओतएसँ छिटकि देलनि। बाबीक चटक्कीयो तँ अद्‌भूते छल! चमगुदरी सन ओहो बाबाक पाछाँ लगलीह। बाबा आगाँ-आगा दौड़ल जाए रहल छलाह आ बाबी पाछुसँ हुनका पकड़बाक हेतु चिल्होड़ि सन झपटल जाए रहल छलीह। जँ बाबा चाङला छलाह तँ बाबी छनकही, जँ ओ छिनार छलाह तँ बाबी छुलाहि आ जँ बाबा खुरलुच्ची छलाह तँ बाबी खुसनी अर्थात्‌ पति-पत्नीमे पाइयो भरिक समता नहि छलनि। जावत ई त्वञ्चाहञ्च चलिते छल कि कल्प-वृक्षक छाहसँ ओ लोकनि अलग भए गेलाह। ओ प्रेत पुनः आयल आ बाबाके तेहन ने धक्का देलक जे ओ अपने आङनमे धड़ाम दए खसलाह। चोट विशेष लगलासँ आसमर्द करए लगलाह तथा बाबाक आँखिसँ वहोवहो नोर खसए लगलनि। समीपमे सुतल लोकक निन्न टूटि गेलैक। बाबी सेहो चौंकि उठलीह तथा आङनमे बाबाक दुर्गति देखि ठहक्का मारलनि। बाबा बाबीक ठेसीकें सुनि तथा आङनमे हुनका जहिना ठाढ़ देखलनि कि पुनः लंक लेब प्रारम्भ कयलनि। बाबाकें भगैत देखि राधे हुनका बोधबाक हेतु सेहो दौड़लाह। बाबा किन्नहु मानए बाला नहि आ राधे बाबाकें किएक आ कोना छोड़ि दितथि। एहि तारतम्यमे भोर भए गेल। बाबी सेहो ओतए पहुँचलीह और बाबासँ निवेदन कयलनि जे ओ कतए एतेक दिनसँ नुकायल छलाह? बाबीक प्रश्नक उत्तर दैत बाबा कछमछाइत बजलाह "आ अहाँ कोना ओतए पहुँच गेलहु? एना जनु अनठाबी। खटरास छोड़ू। एतेक दिन धरि भने अन्हरजाली लागल छल किन्तु आब असलियतक पता धरितँ चलल।"

बाबाक एहि कथा कें सुनि बाबी डफरैत बजलीह—"तँ कोन अपकर्म मे हमरा पकड़लहुँ अछि? और कथिक अन्हरजाली लागल छल से किएक नहि बजैत छी?"

बाबीक एहि प्रश्नक उत्तर दैत बाबा हुलफैत बजलाह—"हमरा ओह-जानक डर से की नहि अछि?" बाबाक एहि अपवाद कें सुनि बाबी सरोष बजलीह—"तँ की हम माहुर खुआ देब? तँ बेस, हम आब भानस-भात छोड़लहुँ। अपने किएक नहि करैत छी?"

बाबीक कटु कथा के सुनि बाबा गुम्हरैत बजलाह,—"हँ ! भानस-भात नहि छोड़ब तँ गाछ कोना हाँकब ?"

बाबाक एहि मारुख कथा के सुनि लोक के ठकमुरी लागि गेलैक। एक दोसरा क मुँह तकैत सभ गोटा बाबाक ओहि नवका अनुसंधान पर चकित छलाह अ· बाबी तामसे लाल भए गेलीह। हुनकर आँखि कुम्हारक आबा भए गेल। सर्वाङ्ग शरीर काँपए लगलनि और मुँह सँ करिया करेत सन बिष के उगलैत ओ बजलीह—"तँ की हम डायन छी ? ककरा साँय-बेटा के खेलिऐक अछि ? के के उपराग देलक अछि ? ओझा-गुणी मँगा के बाहर करू नहि तँ कुफ्फर मचि जाएत।"

बाबीक एहि फुफकार के खलड़ी सन उड़बैत बाबा बजलाह—"तँ अहाँ ओहि गाछ लग कोना हमरा देखलहुँ ?" बाबी सरोष बजलीह कोन गाछ लग ? हम कोन गाछे-बाँसे बौआयल फिरैत छी ? घुरघुरा तँ कटने अछि अहाँ के जे मन के घुरछीयबैत अछि।"

बाबीक एवंक्रमक कथा के सुनि बाबा ओहि प्रेतक वृत्तान्त, कल्प-वृक्षक तथा अपना प्रसंगक सम्पूर्ण कथा के कहल। ओहि कथा के सुनि लोक आश्वस्त भेल और बाबी मुस्की दैत बजलीह—

"हम तँ भरि राति एतहि छी। हमरा कोन नैहर-सासुर अछि जे ततए जायब ? अजगुत बात आ काज तँ अहाँक थिक।"

लोक जे बाबाक अनटोटल कथाक अभ्यस्त भए गेल छलाह, हुनक एहि घटनाके सुनि ओकरा आकस्मिक बुझि चकित भेलाह आ बाबी बड़ यत्नसँ बाबाके चाह बनाकए पियाबए लगलीह।

चुट्टाक दाग

कलगैआं सन अपन गरदनि कें अलगबैत एवं कर्नाल सन अनघोल करैत दुखिया बाबा बजलाह—"हौ राधे ! आस्मर्द कथिक थिकैक ?" राधे बाबाक जिज्ञासाक उत्तर दैत बजलाह—"हद्द भए गेल बाबा ! एना किएक कोकनैत छिऐक ? विद्यार्थी सभ करिआझुमरि खेलाएत छैक। परीक्षाक विरोध मे हरताल केने छैक और की रहतैक ! बाप करए हरबाहि और पुतक नाम दुर्गादास।"

राधेक एहि तरहक गुमसड़ब पर आलापैत बाबा बजलाह—"हौ ! तोहर गुम्हरब यथार्थ किन्तु एहि मे दोष ककर ? जँ पढ़ेतैक तखन ने परीक्षा ? ने तँ परीक्षा कथिक ? हौ ! परफेसर कें फरफैसी सँ छुट्टी छैक ? ताहु मे आब जखन बिनु पढ़नहि लोक उपकुलपति धरि बनैत अछि तँ कथिले पढ़त ?"

बाबाक एहि कथाक प्रतिवाद करैत राधे बजलाह—"अहाँ तँ आब सठिआए गेलहुँ तें भासैत छिऐक। एतेक रास हाकिम-हकिमान जे छैक से बिनु पढ़नहि ?"

बाबा राधेक शंकाकें अखारैत बजलाह– "हौ ! आबक हाकिमक प्रसंग मे हम कहैत छिऔह और हाकिम की ? देखह हाथ उठाए कें लोक मिनिस्टर बनैत अछि। हौ ! एक समय छलैक जखन पढ़ब कें मोल छलैक, बुद्धि और विवेक कें लोक आँकैत छल और ओकर समाज मे पूछ छलैक और आब ककरा कें पुछैत छैक ? अखबार नहि पढ़लह ? उपकुलपति कें घेराऊ होयत छनि और घेराऊ केनहार के तँ परफेसर और विद्यार्थी। हौ ! जँ बड़ जेरगर पाप करैत अछि तँ उपकुलपति होयत अछि और जँ अभगदशा उत्पन्न होयत छैक तँ मुख्यमंत्री। सातो पुरखाक ने निस्तार भए जाइत छैक !"

बाबाक एहि आलापक उत्तर दैत राधे बजलाह—"तँ सभसँ नीक काज कोन छैक बाबा ?" राधेकें अड़राएत उत्तर दैत बाबा बजलाह "हौ ! विश्व-

विद्यालयक कोनो विभागक हेड परफेसर बनब। अजस्र टाका, जबाबदेही कतहु ने ? ने एन्टि कोरपसन, ने सी० बी० आई० आने कोनो इनक्वायरी। अपन बेटा, भातिज, सार-सरबेटा सभ के" फस्टक्लास दए दिऔक। केओ पुछनिहार नहि। हौ ! एहि मे जे दुश्मनी सधाओल जाएत छैक से तँ डायनो के" ने मात करैत अछि ? डायन तँ एकहि बेर प्राण हेरि लैत छैक किन्तु हेड परफेसरक मारल भरि जीवन घुलि-घुलि के" मरैत अछि। हौ ! एतेक दिन गुरु और शिष्यक सम्बन्ध बाप-बेटाक सम्बन्ध छलैक और आब जँ कोनो सुन्दरि कान्या पढ़ैत छैक तँ ओकरा परफेसर अपन खेलौना बुझैत अछि ?"

बाबाक एहि कथा सँ राधे विस्मित होइत बजलाह—"बाबा एहि मे परफेसरे टा के" किएक दोष दैत छिऐक। समाजक कोन वर्ग नीक अछि ? केहन-केहन लोक अपरोजक काज करैत अछि से सभ की अहाँ नहि जनैत छिऐक ?" दुखिया बाबा ठहाका मारि बजलाह—"हौ ! सत्ये आब ककरा कोन दोष देबैक ? सभ के" एके बसात लागि गेलैक अछि। हौ ! एक गोट बड़ मनोरंजक कथा कहैत छिवह जे सत्ये थिकैक।" ई कहि दुखिया बाबा कथा कहब प्रारम्भ कएलनि :—

"१९६५ ई० क फागुन मासक कथा थिक। गामक ५५-५६ वर्षक एक धनीक ग्रामीण स्वेच्छा सँ जखन अपन कनैत स्त्री, पुत्र, पुत्र-वधू, पुत्री तथा आन-आन परिवारक लोकके" छोड़ि बाबाजी बनल तखन कतेक रास साधु-महात्मा भंडारामे जुटल छलाह। कोना हुनका आरखन-कोपीन महन्थजी देने रहथिन तथा कोना हुनकर स्त्री भीखमे हुनका अपन हाथक चानीक चूड़ी, माथक मँगटीका आ पयरक काड़ा अरबा चाउरक संग देने रहथिन, बेटा कनैत हुनकर चरणपर माथ रखने छल, पुत्र-वधू अरबा चाउर, सुपारी एक टाका भीखमे देलनि तथा पुत्री चरण पखारि चरणोदक लेने छलीह जे आब आख्यायि-काक रूपमे परिणत भए गेल अछि। सम्पूर्ण गाममे रामनाथक त्यागक चर्चा तँ छलहे आनो-आन गाममे ई एक गोट उदाहरणक विषय बनि गेल।

साधारणतः लोक स्त्रीक मृत्युक उपरान्त वैरागी बनैत अछि किन्तु रामनाथ पत्नीक उद्दाम रूपके" धोखाक हाट तथा मायाक जाल बुझि ओकरासँ मुक्त

भेलाह। धन-सम्पत्ति, माल-जाल आ रुपैया-पैसाक यद्यपि हुनका अभाव नहि छलनि किन्तु ओकरा ओ भोरक कुहेस बुझलनि। आरबन-कोपीन लेलाक बाद गामक बाहर हुनका हेतु एक गोट कुटी बनल। गुलाब, बेली-चमेली, केतकी गेना आदि फूल लगाओल गेल। अशोक, धातृ, सपातू आदि वृक्ष रोपल गेल। घड़ी-घंटा एवं शंखक ध्वनि सँ ओ कुटी ध्वनित होमए लागल।

रामनाथ रामदास बाबा बनि गेलाह। भिक्षाटन हुनकर वृत्ति छलनि तथा कमण्डल, झोड़ा आ चुट्टा निजी सम्पत्ति। श्वेत वर्ण, पाकल केश, नाम-नाम दाढ़ी, गेरुआ वस्त्र, कन्हा पर झोड़ा तथा हाथमे कमण्डल आ चुट्टा लए ओ जखन गाममे भ्रमणार्थ निकलथि तँ ककरो वशिष्ट आ ककरो विश्वामित्र प्रतीत होथि। मुदा वस्तुतः ओ ओहिमेसँ कोन ऋषिक प्रतिरूप छलाह से ओहि समय धरि अज्ञात छल।

एवंक्रमे जनमानसमे आध्यात्मिक चेतनाकेँ जगबैत, माया एवं ममताकेँ डाहि बाबाजी रामदास तँ वैरागी बनि गेलाह आ हुनकर साध्वी पत्नी वर्ष दिनक अभ्यन्तरे प्रियतमक वियोगजन्य वेदनाक भारसँ दबि जीवनव्यापिनी निराशाक संग अपन नश्वर शरीरकेँ एतहि छोड़ि स्वर्गगामिनी भेलीह।

बाबाजी रामदास तँ पहिने गाजाक सोँटक संग माया आ मोहकेँ पीबि गेल छलाह। अतएव ओहि साध्वीक निधनक ने तँ हुनका कोनो हर्ष रहनि ने कोनो विषाद। जँ कोनो टा हुनका चिन्ता छलनि तँ ओ छल समयपर ठाकुरक पूजा, शंखक ध्वनि आ घड़ी-घंटमे चोट देब। एहि तरहेँ समय बितैत गेल। बाबाजीक आयुमे सेहो बढ़ती तँ आयल किन्तु जेना-जेना हुनकर वयस बढ़ैत गेल, तहिना हुनकामे रहस्यमय परिवर्त्तन परिलक्षित भेल।

बाबाजी रामदासक सारक पुत्र फकीरा अपन स्त्री एवं चारि वर्षक एक-मात्र पुत्रक संग पिसियौतेक आश्रममे रहैत छल। फकीरा संकोची, सुशील तथा परिश्रमी रहितो निर्धन नवयुवक छल आ ओकर स्त्री फेकनी सामरि वर्णक एक्कैस वर्षीया नवयुवतीकेँ डोका सन-सन आँखि, दाड़िम सन दाँत, बिम्बफल सन अधर एवं नागिन सन केशकलाप छलैक। ओ हंसगामिनी जखन आङनमे घुमैत छलि तँ बुझना जाइत छलैक जँ ओतए नभोमण्डलसँ बिजुली

उतरि आयल हो। ओकरा भालक सिन्दुर-बिन्दुकेँ देखलासँ होइत छलैक जे कतिपय इन्दु आबिकए ओकरा घेरि लेने हो। जखन ओ हँसैत छलि तँ अमृतक फुहारा छुटैत छलैक। साँसक झोंकसँ ओकर नाकक नकबेसर हिलैत छलैक तथा अग-प्रत्यंगसँ अनंगक रीति फुटैत छलैक।

अकस्मात् बाबाजी रामदासक नजरि फेकनीक दिव्य सौन्दर्यपर पड़लैक जे अन्तःकरणमे क्षोभ उत्पन्न कयलकैक। ओकर उद्दाम स्वरूप लावण्यक आभासँ रामदासक नेत्र चौंकि गेलनि तथा यौवनक अनुभूति एवं भावनाक मधुर परिदर्शन हुनका अनुप्राणित कए कलुषित बनबए लागल। रामदास जे मास-मास दिनपर कहियो किछु छनक हेतु पुत्रक ओतए जाइत छलाह से आब दिन भरि ओतहि रहथि। फेकनीक चारि वर्षक बेटाक हेतु ठाकुरक भोगक केरा, पेरा आ मिश्री आनथि तथा अपन पुत्र भक्तुसँ फेकनीकेँ साड़ी, साया आ आङी देबाक सिफारिश करथि।

भक्तुक पत्नीकेँ रामदासक एहि तरहक व्यवहार नीक नहि लगलनि। ओ अपन पतिसँ बाबाजी रामदासक आचरणक विरोधमे तँ कहबे कयलनि संगहि फेकनीकेँ नीक-बेजाय सेहो कहलनि। भक्तुक पत्नीक एहि तरहक अपवाद बाबाजीक कामाग्निक संग क्रोधाग्निकेँ सेहो भड़कौलनि आ फेकनी तँ ओहिसँ स्वच्छन्द आ स्वतंत्रे भए गेलीह। बाबाजी भक्तु पर पंचैती बैसौलनि तथा ओकरासँ अपन निर्वाहक हेतु सात बीघा जमीन रजिस्ट्री करबाक हेतु माङ कयलनि। पंचैतीमे गामक मुखिया एवं आनो-आन किछु गोटे बाबाजीक सहायक भए गेलाह। ओहिसँ प्रोत्साहित भए बाबाजी रामदास फेकनीक पति फकीराकेँ कमयबाक हेतु जगबोनी पठाकए ओकर प्रेयसी फेकनीपर पूर्ण अधिकार स्थापित कए १५ फरवरी १९७२ केँ नव साड़ी, मंगटीका, कङ्ना, सूति आदि आभूषण दए सगाइ कए लेलनि। गेरुआ वस्त्रकेँ फेकि पीयर धोती, झोड़ाक स्थानमे रेशमी चादरि तथा कमण्डल आ चुट्टाक स्थानमे छड़ी ओ छाता धारण कयलनि।

भक्तूकेँ रामदासक कृत्त अपमानित आ उपहासित लगलनि। ओ गामक लोक सभसँ अपन प्रतिरक्षा एवं बाबाजीक अधोपतनक रक्षाक प्रसंगमे निवेदनतँ कयलनि किन्तु गाम जे राजनीतिक अखाड़ा, प्रपंचक जाल आ द्वेषक स्कंधावारक

रूपमे परिणत भेल अछि ओतए आब शील, शिष्टाचार आ सामंजस्य कतए ? भक्तूके जँ बयो प्रश्रय देल तँ ओ दोसर गुटक कोपभाजन बनल। अन्ततोगत्वा भक्तूकेँ एक गोट युक्ति सुझलनि। ओ ओहि महन्थक शरणमे गेल जे रामनाथकेँ आइसँ सात वर्ष पूर्व आरवन-कोपीन देने छलाह।

महन्थजीकेँ प्रणाम कए भक्तू नितान्त विनम्र भए निवेदन कयलनि– "बाबा ! रामदास तँ भाठि गेलह।"

भक्तूक वचनकेँ सुनि महन्थ विस्मित होइत पुछलनि—"क्या बात है रे ? साफ-साफ क्यों नहीं बोलता है ?"

महन्थजीक एवंक्रमक कथनक उत्तरमे भक्तू सविस्तार रामदास बाबाजी एवं फेकनीक प्रेमाख्यानकेँ कहलनि। महन्थ एहि कथाकेँ संत संप्रदायक हेतु कलंकक टीका बुझलनि। अतः ओ पाँच गोट बाबाजीकेँ ओतए जाकए रामदासकेँ ठीक करबाक आदेश देलनि।

२० फरवरी १९७२ केँ नौ बजे भोरक समय छल। गामक पूबक ब्रह्मस्थानमे ओ पाँचो बाबाजी आबि धूनी रमाय रामदासकेँ ओतए बजौलक। रामदासकेँ अबितहि ओहिमेसँ एक गोट बाबाजी पूछलक—"रे तुम ऐसन क्यों है रे ?"

रामदास बाबाजीक प्रश्नक उत्तर दैत बाजल—"बाबा बैराग-योग अति कठिन, हम नहि सकब हो"।

बाबाजीकेँ ओकर ई उत्तर मर्माहत कए देलक तथा ओ कृपादासकेँ रामदासकेँ रास्तापर आनबाक आदेश देलक। कृपादास २५-३० वर्षक हृष्ट-पुष्ट, पैंच-पैंच जटाधारी संत छलाह, ब्रह्मचर्य शरीरसँ टपकैत छलनि। शरीरमे भस्म रमौने मात्र कोपीन धारण कयने, भरि डाँरक हुनकर चुट्टा छलनि। बाबाजीक आदेश भेटिते कृपादास रामदासक दुनू हाथ आ पयर रस्सासँ बन्हलनि। दू गोट पैंच-पैंच चुट्टा अपन दुनू कात रखलनि या दू गोट ओहने चुट्टा धूनीमे तपबाक हेतु देल। क्रमशः ब्रह्मस्थानमे लोकक भीड़ लागि गेल। हमहू ओहि ठाम पहुँचलहुँ। हम एहि दृश्यकेँ देखि बिलमि गेलहुँ। बाबाजी

रामदासक हाथ-पयर रस्सासँ बान्हल छलनि। बाबा कृपादास प्रश्नपर प्रश्न रामदासकेँ पुछैत छलाह।

बाबा कृपादास—"क्या रे जब तूँ एक बेरि गड़ामे गिर गिया तो जनम भर उसीमे रहेगा?"

रामदास—"बाबा जँ हम गड़ामे गिरिये गेलियह् तँ आब हमरा ओहिमे रहए दैह्।"

कृपादास—"रे तुम विश्वामित्तर से भी बेसी त्यागी है? जब बह् मेनिका के गड़ामे गिर गिया तो हमने उसको नहि निकाला है रे? हम तो तुमको भी निकालता है। तुम केन क्यों नहि निकलता हे रे?"

रामदास—"बाबा हम जँ आब गृहस्थ बनि गेलियह् तँ आब ओहिमे नीक लगै छह्।"

रामदासक एहि तरहक उक्ति बाबा कृपादासकेँ अत्यन्त उग्र बना देलक। ओ एक गोट चुट्टाकेँ उठाकए ओहिसँ रामदासक पीठ आ पोन पर मारब प्रारम्भ कयलक। आठ-दस चुट्टा मारला पर कृपादास पुनः पुछलक "बोलो रे अभी भी बोलो तुम निकलता है या नहि?"

रामदास जे नारीक सौन्दर्यमे ज्योत्सनाक उज्ज्वलता, शशिक मादक मुस्की एवं चपलाक चकमक देखने छलाह् पुनि बजलाह्—"बाबा बरू जाने मारि दैह् मुदा आब हम एहीमे रहवह्।"

एहि उत्तरकेँ सुनिते बाबा कृपादास कृतान्त सन बुझि पड़लाह्। धुनीमे तप्त भेल चुट्टा जे अग्निवर्ण प्रतीत होइत छल सत्वर ओहिसँ खोचि बाबाजीक पोनपर बैसवए लगलाह् कि समीप बैसल लोक हुनकर हाथकेँ पकड़ल। भीड़ महँक एक ग्रामीण बाजल—"बाबा समाज थिकैक, एना नहि करहक। पुलिस औतैक। मोकदमा होयतैक। हमरा सभ बान्हल जायब।"

ओहि व्यक्तिक कथाकेँ सुनि बाबा कृपादास बजलाह्—"रे ई तोरा समाज कैसन है? तुम तो भीखा देकर घर से इसे निकाल दिया। ई तो मेरा

समाज है। तुम फेन कैसन इसको अपने घरमे रखता है ? हम तुम्हारे जैसन पतीत है ? जब ई जान देगा तो हम जान लेगा। हम इसका चूतर दागेगा। तुम अगर हमको रोके तो बस्तीमे हम आग लगा देगा। तुमको यहाँ कौन बुलाया है ?"

ग्रामीण—"बाबा ! सत्ये ई आब तोहर समाज थिकह। तों एकरा पकड़िकए जतए चाहह लए जाह किन्तु दगहक नहि।"

ओहि ग्रामीणक निवेदनकें सुनि कृपादास बजलाह—"रे क्यों नहीं दागेगा ? एकर मेनिकाके खोझामे दागेगा जो ओ भी बुझेगा कि गड़ामे गिरने का कैसन मरम होता है।"

विचित्र परिस्थिति छल। रामदास फेकनीक प्रेमक फनिगा छलाह। बाबा कृपादास चुट्टाक दाग देबाक हेतु नितान्त उग्र, लोकक समक्ष एक गोट जटिल समस्या छल। सभ असमंजसमे छलाह। ककरो किछु नहि फुराइत छलनि। अकस्मात एक गोट बूढ़ ग्रामीण बाबाजीलोकनिसँ निवेदन कयलनि—"बाबा १० तारीख धरि हमरा लोकनिकें मोहल्लति दैह। ११ मार्चकें गामक स्कूल-पर सम्पूर्ण गामक लोक बैसब आ एहि प्रसंग पर विचार करब"।

बाबा कृपादास हुनकर एहि प्रस्तावकें स्वीकार कयलनि तथा हुनकर जमानत पर रामदासकें छोड़लनि।

क्रमशः ११ मार्च आयल। भोर भेल आ गामक स्कूलपर पाँचो बाबाजीक धूनी लागल। कृपादास ओहि वृद्धकें बजबौलेनि। ओ अपना संग अपराधी रामदास बाबाजीकें हाजिर कयलनि। गामक प्रमुख लोकक बैसक भेल। राम-दासकें एक दिससँ सभ बुझौलनि किन्तु काम आ रतिक प्रणयलीला हुनका जीवनक तेहन अविच्छेद अंग बनि गेल छल जे ओ चुट्टाक दागक वेदनाकें ओहि रमणीक वियोगक वेदनाक समक्ष निम्न बुझलनि। फेकनीक प्रेमक रसमे सराबोर रामदास वीतरागक अपेक्षा ओकर स्नेहावलंबनक इच्छुक छलाह जकर विह्वास द्वेष, दंभ आ दुःखपर विजय पाबिकए भेल। बाबा कृपादास ओकरा चुट्टाक दाग देबाक हेतु उद्यत छलाह आ लोक कर्त्तव्यविमूढ़।

एकाएक बिजुली सन फेकनी ओहि सभामे अयलीह तथा अपन हाथक पोटरीकें फेकि बजलीह-"नारी पुरुषक की कोनो खेलौना थिकैक आ सगाइ घरवा-दुरवाक खेल जे चुटकी भरि लाल सिन्दुरकें स्त्रीक सीऊथमे लेपलासँ भए जाइछ ? एहिमे छैक बाबाजीक गहना। जे समाज बैरागीकें बहुरागी बना सकैछ से कतेक भ्रष्ट आ पतित अछि से की हम नहि जनैत छी ? सगाइ भोगी-पुरुष दुनुक होइत छैक। आ जे भोगी अपन बियौहुआकें छोड़त से की समधौआकें नहि। हम एहि गामसँ अनतए जाए रहल छी। बाबाजीक संग हमर कोनोटा सम्बन्ध नहि अछि।"

एहि तरहें कहि फेकनी ओतएसँ पड़यलीह आ बाबाजी ओकरा गरिआयब प्रारम्भ कयलक। बाबा कृपादास बजलाह—"बच्चा, रामदास यही फेकनीका उर्वशी रूप है। इसी रूप को लेकर फेकनी तुमको नित्य नवीन और अपरिचित दिखाइ दी। लो संभारो अपनी झोड़ी और चुट्टा ! दण्डवत् !"

●

सौतनिक सिनेह

अड़रीसन चनकैत एवं विजलोका सन चमकैत बाबी अपसेआंत होइत बाबा सँ कहए लगलीह—"काज-धंधा करैत-करैत आब हम रेजरेजीस भए गेलहुँ किन्तु जखन ककरहु कोनो टा चिन्ता नहि छैक तँ की हम फकसिआरी काटि कें मरि जाऊ" ?

बाबीक अनखुनाई यद्यपि बाबा कें अनसोहांत लगैत छलनि किन्तु हुनकर लटारहम बाबाक पटराग कें जगौलक तथा ओ लपौड़ी करैत बजलाह "तँ अहाँ कें कोन काज अछि ? एखन तँ थेहगर छी। नाभरोस किएक होयत अछि ? कहियहु अपन-अपन जोगाड़ करैत जायत।"

दुखिया बाबाक एहि तरहक कथा छल तँ बाबीक अनुकूले तथापि ओ बिधुनाइत बजलीह "अपने कहिऔक। बेटा पुतहु तँ अहीक थिक। नाहक हम किएक समर्थन करब। कारकौआ सन भरि दिन कँ(कँए करू और पुतहु बेटाक माथक पुनेस बनल रहत। जेहने कोठी अछि तेहने गोरा। ककरा सँ के कम अछि ?"

बाबीक एहि तरहक दोहसाएब, अकछाएब और अकचकाएब तँ होइते रहैत छल किन्तु बाबीक एहि उक्तिसँ बाबाकें भान भेलनि जे सतौत भेला सँ रमण और हुनकर स्त्री हुनका अनसोहांत लागैत छनि। अतएव गुमसरैत एवं बिहुँसैत बाबा बजलाह—"हूँ ! अहाँ कोना कहबैक ? ओ लोकनि अहाँ कें सोहेबो करए तखन ने ? सौतिनिक जे थिक ! तखन कतहु कठाइन नहि लागए। मोर मोन न पतिआए सौतनिक टाँग दुनू झुलिते जाय।"

बाबा यद्यपि बाबी कें प्रायः उसठ कथा कहि उलबुलबैत रहैत छलाह और बाबी सतत अपन कचोट कें बिसरि अपन काज-धंधा मे लागि जाइत छलीह किन्तु बाबी कें कहियो विश्वास नहि छलनि जे हुनका बेटा पुतहुक खातिर बेलट कथा बाबा सँ सुनए पड़तनि। अतएव बाबाक ई कथा बाबीक

करेज मे तीर सन लगलनि और ओ तोड़ल फूल सन झमान भएके खसि पड़लीह। हुनका ठकमुरी लागि गेलनि। कुतरुम सन अरुणायल आँखि नोर सँ सराबोर भए गेलनि और दनूफक फूल सन उज्जर मुँहक कान्ति व्यथाक भार सँ करिछाए गेलनि।

बाबी थोड़ेक काल धरि निरदिस एवं निष्प्राण भए के ठाढ़ तँ रहलीह किन्तु निरस भेला सन्ता ओ ओतए सँ विदा भए गेलीह। छगुनताक भार सँ निकेना दबल एवं दगधल तथा सिनेह और सहानुभूति सँ विमुख बाबी के बकोर लागि गेलनि। गामक बाहरक पोखरिक मोहार पर किछु काल बैसलाक उपरान्त विचार भेलनि जे किएक नहि ओकरा सभहक मुँह एक बेर देखिलिऔक! आखिर किओ अदना तँ थिक नहि। जखन ओकरा लोकनिकेँ एहने विवेक छैक तँ रहौक। मुदा हुनकर केहेन विचार भेलनि? कोन लज्जति रखलनि? जे अपने ओ गंजन करैत छथि तेँ ने बेटा पुतहु उठल्लू बुझैत अछि। ने तँ ओकरा लोकनि के एना कतौ छजितैक! एहि गुनधुन मे अन्हार भए गेलैक। एक दिशि ममता और मोह बाबी के दलमलित करैत छल और दोसर दिशि अपमानक रीस बाबीक दुनू पयर के जकड़ि के पकड़ने छल। अन्त मे एहि रेड़म-बहेड़म मे ममता और मोह पाछू पड़ि गेल तथा अपमानक लहरि बाबीक पयर के मात्सर्य सँ दूर सकल मनोरथ के सकचुन्नर कए आगाँ बढ़ौलक। बाबी हृदय के हारि बाघ एवं सिंहक निनाद सँ तरङ्गित जंगलक भू-भाग दिशि बढ़लीह।

निपट्ट अन्हार राति। जीव-जन्तु निचेन और निःशब्द भए के दिनुका थकान के मेटेबाक प्रयास मे छल और बाबी विद्युल्लताक प्रकाश मे रास्ता के विधुनैत जाए रहल छलीह असीम एवं अनन्तक दिशि जनिका स्वतः अपनहुँ अपन गन्तव्य स्थानक पता नहि छलनि। जंगलक भू-भाग मे भ्रमण करैत रातिक अवसान समीप आयल किन्तु बाबी अविराम एवं अविरल गति सँ जाइये रहल छलीह। अकस्मात भुड़ुकवा तारा सन चमकैत केराक थीर सन चिक्कन, कीआ सन आँखि तथा अड़हुलक फूल सन अरुणायल अधर पर आतुर मुस्की दैत एक अधेर नारी बाबीक लगीज आबि बड़ सिनेह सँ बाबीके

आह्लादैत अपन गृह चलबाक आग्रह कएलथिन । ओहि रमणी-रत्न के जेहने रूप छलनि तेहने मधुर बोली, शील और स्वभाव जकरा ओतए देखि बाबी कें विस्मय तँ भेलनि किन्तु लाजे ओ हुनका कोना पुछितथिन जे ओ के थिकीह । अतएव बाबी निरधारि कें हुनक गृह जायब नीक बुझलनि और ओ रमणी बड़ सिनेह सँ हुनका अरिआयत अपन गृह आनलक । सुन्दर एवं स्वच्छ घर नीक जकाँ सजाओल छलैक किन्तु गृहपति और धिआ-पुताक बिनु ओ घर दीपक अभाव मे अन्हार सन बाबी कें प्रतीत भेलनि । तेँ बाबी अरबधि कें हुनका पुछिए तँ देलथिन—"अएँ हे बहिन ! अहाँ एतए एकसरे किएक रहैत छियैक तथा अहाँ कें के सभ छथि ?

सुमुखीक नारी हृदय सजग भए गेलनि । निसास छोड़ैत एवं छिरिआएत ओ बजलीह—"हे बहिन ! बेटा अछि, पुतहु अछि, स्वामी छथि किन्तु हुनका सभ गोटा कें हम सौतिन घर छोड़ि एतए पचीस वर्ष सँ तपस्या कए रहल छी ।"

बाबी एक तँ अपनहि व्यथा सँ व्यथित और चिन्ता सँ कातर छलीह किन्तु ओहि सुन्दरिक कथा कें सुनि औंत ममोरैत पुरुष मात्र कें दोहमैत, बजलीह—"अएँ हे बहिन ! एहि अवधि मे ओ लोकनि कहियो अहाँक खोज-बीन नहि कएलनि और अहाँ कें अपन नेना कें देखबाक सेहन्ता कहियो नहि भेल ?"

रमणी बाबीक कथा कें सुनि बिहुँसैत बजलीह—"भेल तँ नहि मुदा आब होइत अछि । किएक तँ जकरा घर छोड़ने छलिऐक सेहो ओकरा सँ अपन मुँह मोड़ि लेलकैक । मुदा छोड़ह एहि अनट कथा कें । थाकल ठहिआएल छह । भोजन आत कए कें सुस्ता लए ।" एहि तरहेँ कहि ओ बाबी कें एक कोठरी मे लए गेलीह जतए नाना प्रकारक भोजन पसरल छल । बाबी बड़ प्रेम सँ भोजन कएलनि और एक गोट पलंग पर ओलरि गेलीह ।

भोर भेल । बाबीक नीन टूटल । सुमुखी बाबी के मुँह-कान धोबक हेतु, स्वच्छ पानि देल तथा पीबाक हेतु चाह । बाबी चाह पिबैत गपक क्रम मे पुछलथिन—"बहिन ! एतए तँ किओ आन नहि अछि और अहाँ कखन ई सभ

काज कए लैत छिऐक ?" बाबीक प्रश्नक उतारा दैत सुमुखी बाजिल "है ! अन्हरोखे ने ई सभ काज भए जाएत छैक। भेलहुँ तँ दू बहिनि और तंकर जोगार करब। कोन भारी बात थिकैक जे तोरा अजगुत बुझि पड़ैत छह"। एवंक्रमें ओतए रहैत पन्द्रह दिन बीत गेल। एम्हर तँ बाबी सुमुखीक अन्न सँ अपन खिरोधनी सन पेट कें भरैत छलीह और ओम्हर दहोदिशि ताका-हेरिक उपरान्त कन्नारोहटि भए रहल छल। लोकक अनुमान छलैक जे बाबी अपन अद्भुत कानि, अटल जिद्द, उधिआएत अहंग और अजबक अनारिक आमेख मे अपन अड़राएत जीवन कें अन्त कए लेलनि। एहि गुनधुन मे बाबा कें आदङ्क सँ ज्वर लागि गेलनि तथा रमण आ टुन्नी हिया हारि कें निरस्त भए बाबी कें तिलाञ्जलि देलनि। सभ अपन-अपन विचार सँ एहि घटना कें आँकैति छल, एक दोसरा कें दोहमैत छल और अपन बुद्धि के सराहैत छल। एहि बीच कतहु सँ कड़कड़ेबाक शब्द भेल। घरक एक कोण दिशक चार मरमरेलैक। एकटा सुन्दरि अधेर रमणी धम दए चार सँ धरातल पर उतरल। ओकरा हाथ मे धह-धह करैत एक गोट ऊक छल। ओ ओहि ऊक सँ बाबा कें उकिआबए लगलीह। बाबा केराक भालरिसन काँपए लगलाह। ओ गद्दह करैत बजलाह—"हो ! दौड़ैत जाह रमणक माय आन लेलक।" ओम्हर रमणक स्त्री सेहो कनारि मारि उठलीह जे एक गोट स्त्री ओकरा झोंटा पकड़ि कें घिसिअबैत अछि। राघे भयातुर भए कें चिहुँकए लगलाह। नहि जानि ककरा पर कोन टिकटिकिआ सवार अछि। ओझा गुणी बजाओल गेलाह। झाड़ फूक भेल। किन्तु परिस्थिति शान्तिक बदला बढ़िते गेल। लोकक अन्दाज छल जे बाबीए भूत बनि एहि तरहक उपद्रव करैत छथि।

एक दिन आलापक क्रम मे सुमुखी बाबी सँ कहल—"हे बहिन ! एतए पहुनाए तँ करैत छह किन्तु गामक खबरि किछु छह। सुनल अछि जे अपने बड़ दुखित छथुन्ह। डाक्टर वैद्य निरसि देलकनि अछि। रमण और टुन्नी सेहो बड़ विपत्ति मे पड़ि गेलाह अछि।" सुमुखिक एहि कथा कें सुनि बाबी कें भेलनि जे ओ हँसी करैत अछि। अतएव ओ अर्थाएत पुछलथिन "बहिन ! एहि बीहर वन मे अहाँ कें कोन पुरुष ई सभ बात कहैत अछि?" सुमुखी

गंभीर होइत बजलीह् "बहिन ! हमरा आब पुरुषक प्रयोजने की अछि ? मोन कें मारि सभ सुख कें सततेधि आइ पच्चीस वर्ष सँ एहि वन मे साधनाक द्वारा जे उपलब्ध भेल अछि तकरे तँ ई सभ फल थिकैक। हे बहिन ! तों ई सभ बुझि कें की करबहुक ? देह धारी थिकाह्।" सुमुखीक एहि बात कें सुनितहि बाबीक नेत्र सँ अश्रुधारा फुटि पड़लनि। ओ विकल होइत बजलीह्— "बहिन ! आब हमरा एतय सँ विदा करह्। आब हमरा ई घर कटैत अछि।" बाबीक एहि उक्ति सँ सुमुखीक डोकासन आँखि मे एकाएक अजस्र नोर डबडबा अएलनि। ओ बाबी कें अपनहि हाथे सोलहो शृंगार कएलनि। खोंइछ मे विलक्षण धान, टाका और सुपारी देलनि और जेवा काल विदाई मे एक गोट पटोर और तसला दैत बजलीह् "हे बहिन ! बहिनिक ओतए सँ तँ जायत छह्। ई पटोर और तसला नेने जाह्। एहि पटोर कें जतेक झाड़बहुक ओहि सँ ततेक भिन्न-भिन्न प्रकारक वस्त्र बहरेतहु और एहि तसला सँ जाहि वस्तु कें मँगबहुक से सभटा ई देतौह्। हे बहिन ! भायक अभाव मे हमही तोरा सासुर पहुँचा दैत छियौह्।"

सासुर जेवा काल बेटी जेना कनैत अछि बाबी तहिना कानए लगलीह्। सुमुखीक कोंढ़ सेहो फाटि गेलनि। सुमुखी बाबी कें करेज लगाए अपन आँचरक कोर सँ हुनकर आँखिक नोर पोछि बजलीह्—"बहिन ! कनेक मन धरि रखियह जे कतहु एक गोट बहिनियो अछि। आब तड़फड़ करह्। गाम दूर छौह्।"

बाबी कें लए सुमुखी कोन मार्ग सँ तथा कोन रूपें ओतए पहुँचलीह् से बाबी किछु नहि बुझि सकलीह्। आंगन मे बाबी जहिना अएलीह् कि सुमुखि कें देखि बाबा चित्कार कए उठलाह्। राधे लंक लेलिन और रमण जहिना भावावेश मे आबि माय दिशि बढ़लाह् कि ओ ओकरा वर्जति बजलीह्—'लो तँ आब हमर नहि अपन सतमाएक बेटा थिकाह्। जन्म हम देलिऔक किन्तु मायक ममता तँ इएह देलकौक। जाह् अपन मायक सेवा टहल करए।"

बाबीक सभटा फरफैसी बन्द भए गेल। हुनका भेलनि जे कतहु सपना तँ नहि देखैत छिऐक। अतएव ओ अपन दुनू आँखि कें मिरलनि और सुमुखीक

दुनू पायर के अपन जब्बर हाथे पकड़ि बजलीह—"बहिन ! आब किन्नहु ने छोड़बह। आब चिन्हलियहु। ई घर, बर, बेटा, बेटी सभ तोरे थिकहु। हम तोहर टहलनी बनि के रहबह। तोहर पूजा करबह। तों एतहि रहए। किन्तु सुमुखी अदृश्य भय गेलीह और बाबीक हाथ छुच्छ भए गेलनि। कतहु सँ मात्र शब्द सुनल गेल—"हे बहिन ! पवन, प्रकाश और पानि की कतहु पकड़ल गेलैक अछि ? तों देहधारी छह और हम रूप गंध रहित एक नारी जे पवन मे रमकैत छी, प्रकाश मे झलकैत छी और पानि में छहकैत छी।

सुमुखीक अन्तर्धान भेला सँ बाबी के क्षोभ और संताप भेलनि और ओ जहिना पटोर के झाड़ि फेकलनि कि विभिन्न प्रकारक वस्त्र ओहि सँ खसए लागल। बाबी मुदित भए ओहि वस्त्र के समेटि उपस्थित लोक के बाँटए लगलीह। बाबा के जखन नहि देखना गेलनि तँ ओ बजलाह—"सभटा बिलहे बाँट कए देब कि किछु हमरो लेल रहए देब"। बाबी मुस्कुरा उठलनि और राधे धोती-अँगा पहिर छमकैत बाबीक दोहाए देबए लगलाह।

वस्त्र के बाँटि बाबी तसला के आनि भोजन साजनक याचना कएलनि। नाना प्रकारक भोजनक सामग्री तसला सँ बहराए लागल। किओ लड्डू बिछए तँ किओ खाजा। एक अपूर्व तमाशा लागि गेल और बाबी दुनू हाथे ओहि भोजन जात के बाँटए लगलीह। बाबा अपन धैर्य के गमबैत दुनू हाथे लड्डू उठाए अपन मुँह मे ढारए लगलाह। अन्त मे बाबी रमणक स्त्री के बजाए ओ पटोर और तसला दैत बजलीह—"कनियाँ ! लिए ई अहीक सासुक उपहार थिक।"

●

ज्ञान-गुदरी

एक तँ अचलभारथी आ दोसर एकोदिष्टक नोत खयलाक उपरान्त अड़रैत एवं असकताइत जहिना दुखिया बाबा खाटपर पड़लाह कि राधे अपन दुनू आँखिसँ अजस्र नोर चुअबैत, दुनू हाथे कपार एवं छाती केँ पिटैत बाबाक ओतए अयलाह। राधेक अनहद तथा अनघोल कानबकेँ सुनि बाबाकेँ भान भेलनि जे अनाइत घटना घटलैक अछि। बाबा यद्यपि पूर्णतः विषयसँ अनवूझ छलाह तथापि अनेरे विषयकेँ अर्थायब आ अलगफुनगी मारबामे तेहन ने पटु छलाह जे प्रायः लोकसँ अड़ारि भए जाइत छलनि किन्तु ओ सतत अपन अड़कोरालसँ अपन आभासकेँ अकारथ नहि होमए देथि।

राधेकेँ बोधैत तथा अपन अङपोछीक छोरसँ हुनका आँखिक नोरकेँ पोछैत दुखिया बाबा बजलाह—"हौ ! राधे, तोँ अकुला गेलह एहि अदना मृत्युसँ ! हौ मौयति तँ अदौ थिकैक। एखन तँ स्त्रीये मुइलथुन अछि। की अपने नहि मरबह हौ ! स्त्रीक मौयति की कोनो अकादारुण थिक। देखए ! हमरे। केहन कटगर तोहर बाबी छथुन। जँ पहिलकी बाबी जीबैत रहितथुन तँ कि किन्नहु ई हमरा गृह अबितथुन। हौ ! अनेरे ने प्रलाप करैत छह। अकिलकेँ समेटए। आब साक्षात लक्ष्मी औथुन !"

बाबाक अतिखाईन कथाकेँ सुनि राधेक नोर तँ सुखाइये गेलिनि संगे ओ आसमर्द करैत हुनका उतारा दैत बाजए लगलाह—"बाबा ! की असर्थ कथा बजैत छी। ककरो एना जुनि उलबुलबिऐक। ओ तँ नैहर गेलीह अछि तेँ हमरा हुनकर विछोहमे कचोट भेल अछि।"

राधेक उताराकेँ सुनि बाबा पुनः कहए लगलाह—"हौ! तोँ सरिपहुँ उमति गेलाह अछि। हौ बताह ! हम की कहलियह जे ओ मरि गेलीह ? मरतह तोहर बाप-पितामह। हौ ! कनेक शब्दोपर तँ ध्यान दिऐक। ओ आब

लक्ष्मी बनिकए औथुन। अर्थात् पिताक गृहसँ पर्याप्त धन सम्पत्ति अनथुन। बुझलह ई हमर भृगुसंहिताक मत थिकैक।"

बाबाक अपाटक कथाकेँ बाबी अकानि रहल छलीह। ओ अपना प्रसंगमे वचनकेँ सुनि आँत ममोड़ैत एवं आमिल पीने बाबाकेँ अनखुनाह, उसठ आदि कहैत ओलब प्रारम्भ कयलनि। बाबा बाबीक मोनक उरमाकेँ देखि अड़ारि करब उचित नहि बुझि कठहँसी हँसैत बाबीसँ कहलनि—"अरे अहाँलोकनि तँ अनेरे अढ़ैया सन सन गप्प करैत छी! ओ की कतहु अजसयरि गेलीह अछि वा कोनो अदनार छथि जे अवर्ण भए जयतीह। हौ! राधे! सत्ये ओ पुरुष कचलोहिया होइत अछि जे घरजमैया बनैत अछि।"

बाबाक एहि कथाकेँ सुनि राधे उत्कण्ठित होइत बजलाह "से कोना बाबा?" दुखिया बाबा नोसिदानीसँ नोसिकेँ झारि नाकमे ठुसैत बजलाह—"हौ! राधे! बेटाक परिचय प्रधानत: बापक नामे होइत छैक। देखए तोँ अपनो। तोहर बाप लुरकुन झा नामी पण्डित छलथुन। तेँ ने नगद एगारह सय टाका दए कए तोहर बिबाह भेलह। हौ! कौखन बेटेक नामे बापक परिचय होइत छैक। हौ! देखह जँ बेटा मजिस्टर वा मिनिस्टर भए जाइत छैक तँ ओ मजिस्टर वा मिनिस्टर साहेबक बाप कहबैत छैक। ककरा हुनकालोकनिक बाप का नाम बुझल रहैत छनि? किन्तु केहन अन्हेर थिक जे जँ किओ घरजमैया भेल वा सासुर आयल तँ अपन नाम, तथा अपना बापक नामसँ पृथक पत्नीक नामसँ परिचित होइत अछि। देखह तोँ हमरे, हमर नाम सदानन्द मिश्र थिक किन्तु लोक दुखिया मिश्र कहैत अछि वा पट्टीक बर। कहह तँ जँ हम एतए नहि रहितहुँ तँ अपन आ अपना बापक नामकेँ नहि ने औन्हबितहुँ।"

बाबाक कटु ऊलहनकेँ सुनि बाबीक कदम्बक फूल सनक ललितगर मुँह पजरल ऊक सन, अड़हुलक फूल सनक लाल ठोर मिझायल कोइला सन तथा आरतक पात सनक कोमल हाथ इन्होर पानिक भाफसन बुझि पड़ल। ओ एक पैघ उसासकेँ छोड़ैत उत्कान तोड़ए लगलीह। बाबाक अरुआयल कथा हुनकर अड़राइत उमंगकेँ भरकुस्सा कए देलकैक। पाँच वर्षक टुन्नी आ सात वर्षक नीलूकेँ लए आन आङनमे रहैत अपन पितियौतक ओतए विदा भेलीह। बाबाक

संग हुनक पहिल पत्नीसँ उत्पन्न पन्द्रह वर्षक पुत्र रमण आ एगारह वर्षक पुत्री शीला बचि रहलीह ।

बाबीक गेलाक उपरान्त अपन आमेखकेँ आँचैत तथा फटकफंदपर इतराइत बाबा पुनः कहए लगलाह—"हौ ! राधे ! राजा दुखी, प्रजा दुखी आ योगीकेँ दुख दुना ।" बाबाक आतुर एवं उताहुल बचनकेँ मृषा नहि मानि राधे पुछलथिन "तँ सुखी के अछि बाबा ?" "हौ हम ककरोपर दोहमैत नहि दैत छिऐक । देखह, स्त्री अपन स्वार्थक निमित्त पतिसँ स्नेह करैत अछि । जँ ओकर कोनो स्वार्थक पूर्त्ति नहि भेलैक कि ओकर प्रधान काज पतिकेँ दोमब, ओकर अरमानकेँ धुनब आ मान-मर्यादाकेँ कुरकुट करब होइछ । हौ ! हम तँ कहबह ओ व्यक्ति धन्य थिकाह जे बेटाक कमाइ बिनु खयने अपर लोकक यात्रा कयलनि ।" बाबाक ज्ञान-गंगा बहिये रहल छलीह कि एहि अवधिमे राधे प्रतिवाद करैत हुनका टोकलनि—"बाबा बेटा-बेटीक कौन दोष ? ओ सभ तँ अपने शोणितक सृजन थिक।" राधेकेँ उत्तर दैत बाबा बाजए लगलाह—"हौ बेटा-बेटी जँ अपने शोनितक सृजन थिक तँ ओकर माथ कोन सिर उपाड़ल गाछक धोधड़ि थिकीह जकरा अगबे भरबधरि हमर काज थिक । हौ ! बेटा-बेटी चुट्टी थिक, चुट्टी । जँ सिरका छह तँ अपने त्रुटि जयतह अन्यथा बिन्हये ने करतह ।"

बाबाक एहि कथाकेँ आमर्ख मानि राधे पुनः कहब प्रारम्भ कयलनि—"बाबा ! माय-बापक पौरुष जखन घटि जाइछ तँ बेटा ओकरा लोकनिक सेवा-टहल की नहि करैत छकै ? की बेटा अपन माय-बापकेँ कमा कए नहि खुआबैत छैक जे अहाँ एना कहैत छिऐक ?"

राधेक शंकाकेँ निमूंल करैत तथा अपन मुँहक आकृतिकेँ बिढ़हरा सन बनबैत एवं बिनबिनाइत बाबा बजलाह—"हौ ! ककर बेटा आब श्रवण छैक ? बाप-मायक टहलटिकोरा बेटा पुतोहु तखने करैत छैक जँ ओकरालोकनिकेँ टाका-पैसा छैक ने तँ बुझल नहि छह 'अइँ नदारथ इस्क टाँय-टाँय' । हौ ! आब तँ विवेक बिला गेलैक या बेटा पुतोहु बिसपिपरिभए गेल जे भोजनमे माय-बापकेँ बिलौकी या वस्त्रमे बिष्ठी दैत अछि तथा सुखक बदलामे सुठिअबैत अछि ।"

बाबाक एहि उक्तिकें सुनि राधे तँ खटपारिकए खाटपर पड़ि रहलाह आ रमण एवं शीला सेहो मोटा-सोटा बान्हि बाबाक उपासक हेतु अपन मामा गामक यात्रा करबाक तैयारी कयलनि। बाबा कड़ाक्कुल सन कनखरल कननमुँह भेल सभटा देखैत तँ छलाह किन्तु स्वतः कनखुराह भेला सन्ता मना ककरा ककरा करितथि।

बाबीकें जखन खबरि भेलनि जे रमण आ शीला सेहो पड़ायल जा रहलीह अछि तँ अपन भाभटकें उसारि दौड़लीह आ ओकरा दुनूकें मना कए पुनि घर आपस अयलीह।

बाबीक एहि उमतल आचरण सँ स्त्रीगण सभ तँ बातक अदौरी खोटए लगलीह और बाबा सोझे अठोंगर कुटए लगलाह। दुहु दिशि सँ एक दोसरा कें दोहमति देमए लागल। उलहन आ उपरागक वर्षा होमय लागल जाहि सँ जट-जटिनक अभिनयक दृश्य उपस्थित भए गेल। स्त्रीगणक विचारें बाबा अधनट, अदत्त, अनसाह, अबूझ और अधलाह छलाह और बाबाक अनुसारें अपर चालि, अपसराहि एवं अपाटकि माउग सँ अपरपाते नीक छल।

बाबा कें बाबीक अपन ओहि पितियौतक ओतए गेनाए सरासरि अखड़ैत छलनि जनिका सँ हिस्सा-बखड़ाक हेतु हुनका सात वर्ष सँ अखज छलनि। अतएव ओ किन्नहु ने आब ओहि घर-आँगन मे रहताह। बासन-चुल्हा फोड़ि ओ मात्र ओहि रातुक हेतु ओतए रहताह तथा अन्हरोखे वृन्दावनकें जेताह।

बाबी कोनो की गुलभराटा छलीह जे चुटकी सँ मसोड़लि जाथि। ओ बाबाक एहि धमकी कें लुरदकक बोली बुझलनि तथा अपन धिया-पुत्ता कें लए सुतबाक हेतु एक गोट घर मे चल गेलीह और बाबा एक लोटा जल भरि जलाशय कें बिदाह भेलाह।

एहि खाँखमाझ मे पड़ि लुरछाही कटैत छलीह केवल रमणक स्त्री जे कोहबरक कनिया छलीह। कोलिसद्दु आम सन चोकड़ल, खिरसाक दूध सन बेरस, उलहन आर उपरागक डर सँ सिहरल, पाकल धानक सीस सन झुकल तथा वेदनाक व्यथा सँ गरासल ओ कँपैत हाथ सँ चारि गोट ठकुआकें जे बाबीक

भायक ओतए से बेन मे आयल छल बावाक सीरमाक नीचा मे राखि देल जे ओ ओहि ठकुआ के खाए के अपन भूख के शान्त करताह। किन्तु बाबा छनकट होयतहुँ व्यवहार मे खिलतोड़े छलाह। हुनका कनेको खुटका नहि भेलनि।

भोर भेल बावी बावाक हेतु चाह अनलनि। बाबा सेहो अपन आमेख के बिसरि ओहि चाय के जहिना अपन ठोर मे लगौलनि कि बावीक नजरि सीरमाक ठकुआ पर पड़लनि। ओ गहुमन सन फुफकारैत बजलीह—"ई की थिक? हमरा गंजन करबु आर अपने ठकुआ माँगि के खेताह?"

बावाक छाती आतङ्के कुमारक माटि सन उपर नीचाँ होमय लागल। ओ नरमदेश्वर के हाथ मे उठाए सपत खाए लगलाह जे हुनका ठकुआक प्रसंग मे किछु ने बुझल छनि और बावी किएक और कोना बावाक बात के सत्य मानितथि जखन कि प्रमाण प्रत्यक्षहि छल। ओ दुनु हाथे अपन कपार पिटए लगलीह और जहिना समीप मे राखल लोड़ही के अपन कपार फोड़बाक हेतु उठौलीह कि रमणक स्त्री दुनु हाथे लोड़ही के छिनैत बजलीह—"माय हम दोषी छी। ओ ठकुआ जे बेन मे आयल छलैक से हम राखि देने छलिऐक। एहि मे हमर दोष अछि।"

बाबा एहि कथा के सुनि गहदाइत एवं खाटके गतानैत बजलाह—

जीव द्रव्य की द्वै दशा
संसारी अरु सिद्ध।
पंज विकल्प अजीबके,
अखय अनादि असिद्ध।

●

स्वर्गक नोत

नोत खयबामे, गप्पकें गिजबामे आ गलंजरपर गेड़ जोतबामे जतेक ब्रह्मणकें गुमान रहैछ ओतेक ककरो नहि। एहन कोनो गाम नहि जतए एक-दू गोट एहि तरहक अगियाबेताल नहि रहैत अछि।

दुखिया बाबाक स्थान गाममे एहने लोकक मध्य छल। सम्बन्धमे ओ चाहे काका रहथुन, भाय रहथुन वा बाबा किन्तु हुनका सभ दुखिये बाबा नामे सम्बोधन करैत छल।

दुखिया बाबा गामक मुखियाक ओतएसँ हुनक बापक बर्खीक नोत खाकए सुतल छलाह। दालिमे कतेक पानि छलैक, तरकारीमे तेलक अंशो धरिक अभाव, माँछक कोनो चर्चो नहि आ जँ दही छलैको तँ ओहि दहीसँ की जे खुरचनसँ परसल जाय? एहि गुनधुनमे दुखिया बाबा आँखि मुनने छलाह कि हुनका ओतए यमराजक दूत उपस्थित भेल। बाबा पहिने तँ अकचकयलाह किन्तु जखन ओ गोर लगैत यमराजक बापक वर्षीक नोत देलथिन तँ बड़ प्रसन्न होइत पुछलथिन—"यमदूत! तमाकुल खाइत छी? लियए, तमाकुल। देखू बड़की पत्ती थिकैक। जँ ई पत्ती नहि खाइत होइ तँ कनेक पानि पीबि लेब। बड़ कड़गर छैक।"

दुखिया बाबाक एहि कथाकें सुनि यमदूत बजलनि—"बाबा! तमाकुल राखल जाओ। स्वर्गमे ई वस्तु नहि छैक। तें आदति नहि अछि।"

दुखिया बाबा उताहुल होइत पुछलनि—"अयँ औ यमदूत! स्वर्गमे माछ छैक? दही, मधुर, आम तँ अवश्ये होयतैक?"

यमदूत बाबाकें आश्वस्त करैत तड़फड़ उत्तर देलनि—"बाबा, स्वर्ग तँ स्वर्गे थिक। रेहु, भुन्ना, भाकुर, कवै, माङुर एहन कोन माछ अछि जे स्वर्गमे नहि? कामधेनुक दूधक दहीक समक्ष एतुका गाय-महींसक दूधक कोनो स्थान

छैक ? स्वर्गक रसगुल्ला, खाजा आ लड्डूक सोझाँमे पिन्टू, सिलाउ तथा मैसूरक कोनो चर्चा कयल जा सकैछ ? आम तँ स्वर्गेसँ अमरावतीमे आयल आ ओतहिसँ समग्र संसारमे पसरल ।" यमदूतक एहि उक्तिके सुनि बाबाक जीह पनिछाय लगलनि तथा ओ उताहुल होइत बजलाह—"यमदूत ! की कहू ! लोक तेहन ने अपरोजक आ अदत्त भए गेल अछि जे सभ टा क्रिया-कर्मके तँ छोड़िये देलक । जँ ब्राह्मणो भोजन करबैत अछि तँ अनसोहाँते लगैत छैक । ब्राह्मण भोजनक फल तँ तखने होइछ जखन ब्राह्मण भोजनक उपरान्त अफरए लागथि । यमदूत ! यमराजके कहि देबनि कोनो वेसी इन्तजाम नहि करथि । पाँच सेर खोआ, सावा सय रसगुल्ला, पचास गोट खाजा ततबेक लड्डुओ आ एक सय मालदह वा बम्बै आम हमरा अकसक कए दैत अछि । एतबेमे अटाबेस भए जयतनि ।" बाबाक अकट्ठ कथाके सुनि यमदूत बजलाह—"बाबा, अपने केहन अजगुत बात बजैत छी ? यमराज सम्पूर्ण यमपुरीक मालिके तँ थिकाह । आब तड़फड़ करू । ओतुक्का ओरिआओन देखि कए चकबिदोर लागि जायत आ एक बेर भोजन कयलापर फेर किन्नहु एहि ठामक भोजक चर्चा नहि करब ।"

यमदूतक एहि तरहक आड्वाल उक्ति यद्यपि अन्हरजालीमे राखि बाबाके उन्मत्त बना रहल छल, तथापि हुनक बातपर बाबाके अनभरोस नहि भेलनि । ओ अपन छाता आ फराठी लए यमदूतक पाछाँ-पाछाँ ओहि खदुका जकाँ विदा भेलाह जे अकरी महाजनक सिपाहीक पाछाँ-पाछाँ अनमनायल भेल जाइत अछि । जेना-जेना समय वितैत गेल, बाबाके अशुभ होमए लगलनि । ओ आतंकित भए गेलाह आ बड़ नम्र भए यमदूतसँ पुछलनि—"यमदूत ! आब तँ स्वर्ग निकटे होयतैक ? अनभुआर गाम-घरके देखि आशंका होइत अछि जे कतहु जयपंथीपर तँ नहि चढ़ल ली ?" बाबाक एहि वचनके सुनि यमदूत बाबाके चुटकी लैत कहलनि—"बाबा अपने सन चरफर व्यक्ति कतहु गफलतिमे पड़ल अछि ! यमपुरी आब आबि गेलहुँ खुखना भेल परेत सभके की नहि देखैत छिऐक ? ई लोकनि जखन मर्त्यलोकमे छलाह तँ खिरकिट्टी छलाह आ एहि ठामक खिच्चरि खाकए भोकुना-बिलाड़ बनि गेलाह अछि । आब अहूँ

ओतुक्का आस छोड़ि सतत एहि ठाम रहब। एतहि ठाढ़ रहू ! हम धर्मराजकें अपनेक अयबाक खबरि कए दैत छियनि।"

यमदूतक एवंक्रमक उक्तिसँ बाबा खुरछाही काटए लगलाह। यमपुरीक जीवजन्तुकें देखि हुनका डरसँ तरास लागि गेलनि। ओ एक भयंकर जीवसँ पीवाक हेतु पानि मङलथिन। ओ हुनका कहलथिन "एतए समयेपर सभ किछु भेटैत छैक। धर्मराजक बिना हिलबो-डोलब धरि मना छैक।"

ओकर एहि उक्तिकें सुनि बाबा तमसाइत बजलाह—"दहलेल कहाँ केँ। हौ ! यमराजक बापक बर्पी थिकनि, तें हमरा नोत दए कए बजौलनि अछि ब्राह्मण भोजनक निमित्त आ तों पानियो धरि नहि दैत छह ? धरकट कहाँकें। तों टहलटिकोरा कयनिहार थिकाह। एना जुनि टरकारह।"

बाबाक एहि कथाकें सुनि यमपुरीक ओ जीव बाजल—"टण्टघन्ट समेटू नहि तँ टकुआतान कए देब। एतए ने तँ क्यो शूद्र अछि आ ने ब्राह्मण। लेखा-जोखा भए रहल अछि जेहन जेरगर पाप कयने होयब तेहने टग हानब।"

बाबाक सभ टा जीवट भोरका ओस जकाँ सुखा गेलनि। आँखिसँ नोर टघरए लगलनि। ओ सासुर जाइत कालक कन्या जकाँ घौना करए लगलाह। यमदूतकें छनकट, अनसाह एवं अचनट कहैत गारि देब आरम्भ कयलनि कि धर्मराजक तलबी भेलनि। बाबा धर्मराजक सोझाँमे जहिना गेलाह कि यमदूत ओतएसँ छिटकि देलनि। धर्मराज समीप बैसल चित्रगुप्तसँ बाबाक लेखा-जोखा करबाक आदेश देलनि। चित्रगुप्त बहीक पन्ना उनटबैत बजलाह—"महाराज ! हिनकर खातामे तँ सभ टा कारिये चेन्ह छनि !" चित्रगुप्तक उत्तरकें सुनि धर्मराज पुछलनि—"ई एक नीक ब्राह्मण थिकाह। गंगास्नान कतेको बेर कयलनि अछि। पूजा-पाठ नित्य कयलनि। तखन एना किएक ?"

धर्मराजक एहि कथाकें सुनि बाबाके भान भेलनि जे धर्मराजो ब्राह्मणे थिकाह। अतएव ओ तराक दए उत्तर देलनि—"सरकार, धरातले सन स्वर्गोमे जातीयता पसरि गेलैक अछि। 'ब्राह्मणस्य ब्राह्मणो गतिः।' सरकार, जँ ब्राह्मणकें नहि देखबैक तँ दोसराकें कोन गरज छैक। धरातलोपर ब्राह्मणे सताओल जाइत अछि आ एतहु ब्राह्मणे !"

बाबाक आक्षेपक उत्तर दैत चित्रगुप्त महाराज हुनकर क्रियाकलापक प्रसंगमे स-उदाहरण बजलाह—"महाराज ! अथवल होयतहुँ ई अगाध एवं अद्‌भुत व्यक्ति छथि । ब्रह्मो बाबाकेँ ई झपासा दए अपन काज सुतारि लेलनि ।"

धर्मराज अकचकाइत बजलाह—"से कोना ?"

चित्रगुप्त कहब प्रारम्भ कयलनि—"महाराज ! छठिआरिक रातिमे ब्रह्मा बाबा हिनका हेतु परिव्राज्य योग लिखलथिन, किन्तु अजराजोरी अपने अनुसन्धानक द्वारा ई ओकरा परिवार-जप-योग सिद्ध कयलनि तथा अपन बेटा-बेटी, भातिज, सार-सरबेटा सभकेँ नीक-नीक नोकरी दियौलनि । एतबेक नहि, ई तेहन प्रपंची छथि जे अपन बुद्धिक तर्कसँ ककरो फुसिया सकैत छथि । एक बेरक कथा थिक जे ई एक युवककेँ कोट-पेन्टमे देखि एक गोटेसँ हुनकर परिचय पात पूछि जोरसँ सोर करए लगलाह—बच्चा ! बच्चा ! नवयुवक अकचकाइत समीप जँ अयलाह तँ निःसँकोच भए कहलथिन—हौ, हम तोहर मौसा थिकियह । प्रणाम करह ।"

नवयुवक प्रणाम करैत उत्तर देलक—"हमरा तँ मौसी छथिहे नहि । हमर माँ तँ एकसरि बहिन छलीह !"

बाबा हुनक अपवादक खण्डन करैत बजलाह—"हौ बताह ! तोरा मायक जन्मक सात वर्ष पूर्वे तोहर मौसी मरि गेलीह । जखन तो तीन वर्षक छलाह तँ हम तोरा ओतए गेल छलहुँ । तोहर माय बड़ प्रेमसँ खुऔलनि-पिऔलनि । अएबा काल तोहर बाप एक जोड़ धोती आ दस टाका विदाइमे सेहो देने छलाह । आब तँ ओहो लोकनि नहि रहलाह । तखन हर्ष अछि जे तोँ मजिस्टर भेलाह । हौ ! सम्बन्ध बड़ प्रबल होइत छैक । देब-लेब किछु थिकैक । आठम दिन तोहर मसिऔतक उपनयन होयतह । आबिकए ब्राह्मण बना दहुन !"

नवयुवक एक सय टाकाक एक गोट नोट दैत बजलाह—"मौसा ! हमरा तँ फुरसति नहि भेटत तखन चुमाओन आदि लएर हमरा माफ कए दितहुँ ।"

बाबा सत्वर उत्तर दैत बजलाह—"बच्चा, आयब-जायब किछु थिकैक। सम्बन्ध धरि रखने रही। तों तँ अपने सज्ञान छह।"

चित्रगुप्तक एहि कथाकें सुनि यमराज चकित भए पुछलथिन—"ई तँ पण्डित छथि। फूसि कोना बजलाह? प्राय: भ्रम भेल होयतनि।"

चित्रगुप्त यमराजक जिज्ञासाक उत्तर दैत पुन: कहब प्रारम्भ कयलनि—"महाराज, फुसिक तँ ई खेतिये करैत छलाह। एक बेरक कथा थिक। एक गोट होटलमे ई अपन एक गोट शिष्यक संग भोजन करबाक हेतु गेलाह। होटलमे सोलह गोटेक भोजन बनल छल। गुरु आ शिष्य मिलि सभ टा भोजन ढकोसि गेलाह। शिष्यसँ जखन भोजनक हेतु होटलवला पाइ मङलथिन तँ ओ ई कहि जे हम हिनके समक्ष पाइ दए देलियह छुटकारा पौलनि आ बाबा भोजने कालमे भोकारि पाड़ि कानए लगलाह ई कहैत जे—'औ बाबू! अहाँ हमरा समक्षमे खेनाइक पैसा देलियनि, किन्तु हम तँ हिनका एकसरेमे देलियनि। कतहु हमरोसँ ने फेर माङथि।' एहि तरहें ई होटलवलाकें झपासा दए कए ठकि लेलथिन।"

"चित्रगुप्त जी जखन एगारह गोटेक भोजनकें ई एकसरे खाइत छथि तँ हिनक भोजनक जोगार कोना होइत छनि?" धर्मराज नितान्त विस्मित भए पुछलथिन।

धर्मराजक प्रश्नक उत्तर दैत चित्रगुप्त जी कहब प्रारम्भ कयलनि—"महाराज! यद्यपि हिनका अठारह गोट पत्नी छथिन किन्तु ई अपन परिवारमे मात्र एके पत्नीकें रखने छथि। ई भलमानुस ब्राह्मण थिकाह। भरि सालमे एगारह मास तँ ई सासुरेमे बितबैत छथि आ एक मासमे जे बचैत छनि तकर उपयोग ई भिन्न-भिन्न महाजनक ऋण ओसूल कयनिहार तगेदाक सिपाहीक रूपमे बितबैत छथि।"

"चित्रगुप्त जी! अठारह गोट पत्नी छनि। आश्चर्य! तखन तँ ई एक छोट छीन साँढ़े थिकाह!"

"हँ महाराज! आहार आ व्यवहार सेहो तहिना छनि?'

"चित्रगुप्त जी ! सासुरमे हिनकर आगत-स्वागत तँ खूब होइत होयतनि तथा महाजनलोकनिक प्रियपात्र ई कोना भए गेलाह ?" धर्मराजक एहि प्रश्नक उत्तर दैत चित्रगुप्त जी बजलाह—"महाराज ! सासुरमे हिनकर पदार्पण भेल कि सासु हिनकर भोजनक हेतु औनापथारी देब प्रारम्भ कयलनि। स्वतः तँ ई गीड़ि ओलरए लगैत छथि आ हिनकर सार, ससुर तथा सासुकेँ चन्द्रायनव्रत प्रारम्भ भए जाइत छनि। महाजनक तँ ई एक पैघ हथकण्डा थिकाह। जे कड़ारपर ऋण अदाय नहि कयलनि ओ सूदि-मूरक संग हिनकर भोजनक भारकेँ उगहए लगलाह।"

"चित्रगुप्त जी ! सभ किछु होइतो ई व्यक्ति आमेखी आ उकठाह तँ नहि छथि ?"

जिज्ञासाक स्वरमे धर्मराज पुछलनि।

चित्रगुप्त एहि जिज्ञासाक उत्तर दैत कहब प्रारम्भ कयलनि—"महाराज ! आमेखी तँ ई तेहन छथि जे एक फड़ी माछ पठाकए अपना पक्षमे मोकदमाक फैसला कए लैत छथि तथा एकान्त विद्यामे तँ ई तेहन प्रवीण छथि जे ई कौखन स्वर्गोमे हड़ताल एवं अनशन करा सकैत छथि।"

चित्रगुप्तक एहि कथाकेँ आमर्ख मानि धर्मराज बजलाह—"से कोना औ ? ई तँ मुँहसच धोल-पखारल छथि।"

चित्रगुप्त बहीक दोसर पन्नाकेँ उनटबैत कहलनि—"महाराज ! हिनकर अपने पितिऔत हिनकापर अपन हिस्सा बखड़ाक हेतु मोकदमा कयलनि। जाहि हाकिमक इजलासमे ओ मोकदमा छल, हुनका बेटाकेँ ई अपन पितिऔतक नामे एक फड़ी रेहु माँछ पठौलनि। हाकिम घुसखोर नहि छलाह। एहिपर हुनका बड़ तामस भेलनि आ ओहि मोकदमाकेँ ओ खारिज कए देलनि। महाराज ! हिनक गुणानुवाद कतेक कहू ? चुगली कए कए ई व्यक्ति-व्यक्तिमे अड़ारि उत्पन्न करैत छथि आ एक अठन्नीकेँ ई तीन अठन्नी बनबैत छथि।"

चित्रगुप्तक एहि तरहक कथाकेँ सुनि दुखिया बाबाक रहल-सहल धैर्यक अन्त भए गेल तथा अनबोल करैत ओ बजलाह—"औ चित्रगुप्तजी ! अहाँ केँ

हमरासँ कथिक अड़खीस अछि ? जे एना उकटैत छी ? औ हमरा अहाँके ने तँ एक आरिमे खेते अछि आ ने कोनो सड़ुआरे। तखन व्यर्थे ने एतेक असमर्द कयने छी। एकदिसाह सभ टा बाजल जाए रहल छी। कनेक अपनोपर तँ नजरि दियौक। अहाँ जब्बर अवश्य छी किन्तु एना जनु अन्हेर करी। अहाँक यमदूत ठकि कए अनलक अछि। कतेक ओछाह अछि अहाँक दूत जे नोत देलक आ पाँच घण्टा भए गेल आ एखनधरि बिजहो धरि नहि करौलक। तखनो अहाँ सेखी बघारैत छी ? जेहने अलगफुलगी मालिक तेहने अलच्छ टहलू ! धर्मराज ! कतएक नियम थिकैक जे प्रपंच कए ककरो स्त्री, धीया-पूतासँ पृथक करा दिऐक ?"

बाबाक एहि उलहनक उत्तर दैत चित्रगुप्त जी बजलाह—"अपने सभकें ठकि सकैत छी किन्तु हमरा नहि। की बुझल नहि अछि "लिखतक आगू बकत"के कोनो स्थान नहि छैक। अपने तेहन उड़ाँत छी जे जँ यमदूत अकिलसँ काज नहि करैत तँ अपनेकें की ओ किन्नहु पकड़ि सकैत ? मोन नहि अछि १९४२ मे जखन अहाँ रेलक पटरी उखारने रहिऐक आ तार तोड़लिऐक तँ अहाँकें पकड़बाक हेतु अंग्रेजी सरकारक खोफिया बौआइत रहि गेल आ अहाँ नेपाल तरायमे भागवत बाँचैत रही। धन्य छी अहाँ जनिका करामतिसँ कतेको रास जमींदार कुरकुट भए गेलाह आ अहाँ कतेको घरकें घरहंज कयलहुँ। आब एतएसँ अहाँ किन्नहु नहि घसकि सकैत छी। अहाँक हेतु एक अन्हार कारी कोठरी बनि गेल अछि। अहाँ ओहिमे बंद रहब। भोजनमे भातक माँड़ आ माछक काँट भेटत।"

चित्रगुप्तक एहि कथाकें सुनि बाबाकें गामक पटवारी द्वारा द्वातपूजाक टाका मङबाक प्रसंग स्मरण भेलनि। कोना ओ देवानजीकें टाका नहि देलथिन, कोना ओहि कारणें हुनकर जमीन निलाम कराओल गेल तथा ओ राजक मनेजरक ओतए जखन निवेदन कयलनि तँ बकाया मालगुजारी कोना माफ भेल छल सभटा बात मोन पड़लनि। बाबा रहलसहल धैर्यकें समेटि धर्मराजसँ निवेदन करैत बजलाह—"महाराज ! हिनकर टुसकायब आर

टिटकारीके की अपने नहि जनैत छियनि ? ई तँ हमरा धुरबन्हू छागर बुझैत छथि किन्तु ईहो धरि ई नहि जनैत छथि जे ओकरा परिछनि लिआबोल जाइछ। धर्मावतार हम अपने लग रहब किन्तु एके गोट मनोरथ अछि जे किछु टाका-पैसा लगानी-भिरानीमे छल तकरा विषयमे बौआके नहि कहलियनि आ हुनका मायसँ एक बेर भेँट कए अबितहुँ। ई कहि ओ ठोह पारि कए कानए लगलाह।

हुनकर कानब सुनि अड़ोस-पड़ोसक लोक दौड़ि आयल। कोलाहल मचि गेल। बाबाक निन्न सेहो टुटल आ लोक सभके देखि ओ कौखन तँ यमदूतके आ कौखन लोक सभके गारि देबए लगलाह।

